प्रवेश प्रारम्भ प्रवेश प्रारम्भ प्रवेश प्रारम्भ

सरस्वती योगीराज इंटर कॉलेज

पताः बोगवा गली, जेल चौराहा, प्रथम गली से, नैनी, इलाहाबाद

d{kk %dsth-ls 12 rd

प्रबंधक
राजकुमार गुप्ता

प्रधानाचार्या
श्रीमती एम.सिंह

शिक्षा विशेषांक निकालने पर हार्दिक शुभकामनाएं ☎2696975

सुमन विद्या निकेतन इण्टर कॉलेज

विनोवा नगर, नैनी, प्रयाग

डॉ0 अशोक मिश्र
प्रधानाचार्य

फोनः2448306

आर.ए. मेमोरियल जूनियर हाईस्कूल

(हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम)
कम से कम शुल्क

सिलाई कढ़ाई कला केन्द्र

सिलाई, कढ़ाई, हाथ की कढ़ाई, मशीन की कढ़ाई, साफ्ट ट्वाय, टेढ़ी वियर, केंट, डॉग, मंकी

सम्पर्कःजोंधवल (मां काली मन्दिर के पास) तेलियरगंज, इलाहाबाद

प्रबंधक
श्री नन्दलाल यादव

प्रधानाचार्या
श्रीमती विशाखा यादव

गुप्त रोगों का सफल ईलाज

ukenhZ] LoIunks"k] 'kh?kz&iru] /kkrq{k.k] NksVkiu] irykiu] Vs<+kiu] fydsfj;k] ekfldkZ M3Mh] psgjsdh NkbZ;k¡ avkS j xqIr jksx

हकीम एम0शामीम

SC. UM(CAL) Reg.

होटल समीरा
काटजू रोड निकट रेलवे स्टेशन
इलाहाबाद

मिलने का समयः
प्रत्येक माह 16 से 20 तारिख
सुबहः 9 से रात्रि 8 बजे तक।

फोनः221219

मॉ वैष्णों कम्यूनिकेशन

दुकान संख्याः 49, सहकारी बाजार, महाराजा अग्रसेन इंटर कॉलेज के पास, देवरिया

टेलिफोन, कार्डलेस, इंटरकाम एवं टेलीफोन से सम्बंधित स्पेयर पाटर्स के विक्रेता एवं मरम्मत कर्ता

☎ : 2233763

चिल्ड्रेन्स एकाडेमी

एच.आई.जी–3, प्रीतम नगर, इलाहाबाद

(अंग्रेजी माध्यम स्कूल)
प्री0 नर्सरी से कक्षा आठ तक

अनुभवी अध्यापिकाओं द्वारा उचित शिक्षा का प्रबंन्ध तथा प्रत्येक कक्षा में सीमित बच्चे

प्रधानाचार्या
प्रीति बोस

"SHAPING INDIA'S DESTINY THROUGH LITERACY" ☎2697876

1मई 2003 से प्रवेश प्रारम्भ

,y-MsfoM eseksfj;y twfu;j gkbZ Ldwy

(अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम)

कक्षा एल.के.जी से 10 तक (हिन्दी माध्यम) कक्षा जू.के.जी से आठ तक (अंग्रेजी माध्यम)

नोटः अनुसूचित, पिछड़ी एवं अल्पसंख्यक छात्र तथा छात्राओं को छात्रवृत्ति सुविधा।

प्रबंधक
श्री अरूण ए.डेविड

पताः स्टेशन रोड, नैनी, इलाहबाद

प्रधानाचार्या
एस.जे.डेविड

उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ☎2406456, 2651217

विक्कन लाल साहू इंटरमीडिएट कॉलेज

कक्षा : के.जी. से 12 तक

कुशल शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा शिक्षा की उत्तम व्यवस्था व कम्प्यूटर प्रशिक्षण

नोट : अनूसूचित, पिछड़ी एवं अल्पसंख्यक छात्र तथा छात्राओं को छात्रवृत्ति की सुविधा।

प्रबंधक
केदारनाथ चौधरी
(एडवोकेट, हाईकोर्ट)

पताः विनोवा नगर, नैनी, इलाहबाद

प्रधानाचार्या
श्रीमती कंचन लता श्रीवास्तव
(एम.ए.एल.टी)

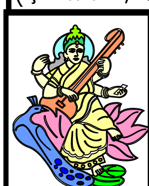

उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ☎2699180

शुभम शिक्षा निकेतन इण्टरमिडिएट कॉलेज

कक्षा : के.जी. से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

बालक / बालिकाए।

प्रबंधक
रमाकांत मिश्र
(एम.काम)

पताः शिव नगर, नैनी, इलाहाबाद

प्रधानाचार्या
दयाशंकर मिश्रा
(एम.ए.एल.एल.बी)

संस्थापित :1987

उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ☎ 2636421

श्याम लाल इंटर कॉलेज

चकिया, कसारी–मसारी, इलाहाबाद

कक्षा :केजी से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

(बालक / बालिकाओं)

प्रबंधक
अनिल कुशवाहा

प्रधानाचार्या
सुनीता कुशवाहा
(एम.एससी.बी.एड)

वर्ष : 3, अंक 5, मई 2003

हिन्दी मासिक पत्रिका

स्नेह समाज

संपादक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

संयुक्त संपादक

मधुकर मिश्र

सहायक संपादक

0 रजनीश कुमार तिवारी 0 सीमा मिश्रा

सलाहकार संपादक

नवलाख अहमद सिद्दीकी

साहित्यसंपादक :

डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय

ब्युरो :

गिरिराजजी दूबे (गोरखपुर)

ज्ञानेन्द्र सिंह (मिर्जापुर)

सूर्यकांत त्रिपाठी, मनीष कुमार दूबे (फतेहपुर)

अजय कुमार विश्वकर्मा'यशस्वी(प्रतापगढ़)

इन्द्रहास पाण्डेय (गुजरात)

जागृति नगरिया (सामा0 ब्यूरो, इला0)

स्वत्वाधिकारी, सपांदक, प्रकाशक व मुद्रक **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** द्वारा **भार्गव प्रेस,** बाई का बाग, इलाहाबाद, से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : 8380/2001

आवश्यक सूचना

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

पत्रिका के लिए सम्पर्क करें:

पापुलर बुक डिपों,

इलाहाबाद गर्ल्स डिग्री कॉलेज, कैम्पस, जीरो रोड बस अड्डा के पास, इलाहाबाद

सम्पादकीय

fiz; ikBd fe=ksa] ueLdkj

volkn ds dky esa Lr fo'o ij Nk;s gq;s gSaA bl dkj clar Hkh dkS[kyk;k lk lM+dksa ij ?kwe jgk gS fdvkf[kj og mrjs rks dgkWa mrjsA oSls rks olar dM+s BkV dkV ds lkFk vkrk gS] mlds lkFk vkok'kh; lqj Hkh vkrs gSaA dks;y dh dwd oqyoqy dh pgd] izokl h if{k;ksa dks fonk] /kjrh ls <ksy ea th js dh rku] jax dh Qqgkj dk pVdhyk iu] fdUrq bl dkj lcdq N lwuk&lwuk lk yxk] uhe eg qvk vke ds dkS j mnkl ea dj xfr ls cgus dkyh c;kj nqxZfU/kr L=h Fkh A [kkM+h ds rsy ksa dh rqgdh vkx mBrs /kq;sa clar dks dkS jk fn;s fc[kjk fn;s A vle; Hkxk fn;sA

oSls Hkh olar vc eg h fn[kkbZ iM+rk gSA vius iqjtksj vxM+kbZ esa] fc[kjrs taxy lw[ks [kM+s BwWB iVrh unf;kW] iRFkj ksa ds rjk'ksu;s taxy] c;kj dks dkW/krh tkjgh gSA olar vkrk gS] meax mRlkg txkus A uq pssrukds }kj [kksyus] fdly; dks Qqufx;ksa dsk] iq"iksa dsk] vj?kku ls Hkjus] dks ey fdly; fdlh fnu lw[ks i.kZ gks tk;saxsa] >j tk,xsa] dqN Qy gksus ds fy,] dqN fu'Qy gh A tks lhfer lq[k ds fy, Tokj vkrk gS] mlds dM+h dher gksrh gSA mlsIe`fr;ksa dh Nk ges alatks ysrs gS n`<+ bPNk 'kfDr dk ys yksxA

vkt ds fd'kksj fd'kksj gq;s ugha dh mues a;kSou dh ifjiDork vk xbZ A olar dgkW izxV gksA olar rsk,d mYykl gSA iq jkru dks fonk nsus] uohu dks /kkj.k djus dk A ykSHk ,oa ykyp dk ifjR;kx djus dk] fQj Hkh ge dqaBk l=ka ls nq[kh jg dj vius gh nq[k ls nc s iM+s gSA

clar ds oS'dh dj.k ;k fo'oe; gksus dk vFkZ gS og lkfgR;] le; ,oa O;fDr esa fo|eku gksA gj psg jk uh jl u gks] gj /kM+du cslq jh u gks] gj g"kZ dh vyx vfHkO;fDr u gks] gj isM+ dk viuk vyx olar u gksa] e/kq lap; djus dk yh e/kq eD[kh ds e/kq lap; dk vyx Lokn u gksA ,s lk olar ge esa ugha pkfg, tks O;fDrxr gksA og dh t dgha udgha dbyc oqykvo'; jgk gksxk tks clar dk oS'dh dj.k djsxkA bl ;q) vkS j Hkz"V jktuhfr ls Mjsxk ugha cfYd mudk MVdj lkeuk djsxkA fo'o dh izHkq rk dh dkWa M+ks j ysus dk yksa ls og izHkk for ugha gksxkA cfYd fuHkhZd uoy fo'kn oa lr ds izR;kj ks i.k dk iq.kZ vkxeu tsgk nNs M+s xkA vkS j blds rq eq y fuukn ^fo'oLusg lekt^ us NsM+ fn;k gSA Hky s gh Ekks M+h cgqr=q fV;kW vkids blch [kVdrh gks a fdrq ;g dgha xgjs rd vkids lgykrh Hkh gS nqykjrh Hkh gSA vkids Vksdrh] vkids txkrh Hkh gS /khjs&/khjs Lusg ls fl Drdj A dfooj fujkyk th ds 'kCnks esa

vHkh vHkh rks esjs thou esa

vk;k gS olar

vHkh u gks xk esjk var

bUgha iafDr;ksa ds lkFk

dq lqe yrk feJk ^lj y^

dk;Zdkjh laikfnd

पत्र व्यवहार का पता : एल.आई.जी.—93, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद फैक्स सं0 : 0532—655565

सम्पादकीय कार्यालय : एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद ☎2552444

लखनऊ ऑफिस : 280/28, ऊषा भवन, मवैया, कानपुर रोड, लखनऊ ☎ (0522)-205410

देवरिया ऑफिसः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नगर, भुजौली कॉलोनी, देवरिया ☎(05568)25085

अमेरिका ने क्या दिया ईराकी जनता को?

सद्दाम से मुक्ति या भूख, बेरोजगारी, लूटपाट

श्रीमती जया 'गोकुल'

अमेरिका अपने को हमेशा विश्व का मुखिया दर्शानें का प्रयास करता रहा है। चाहें वह किसी देश का अंदरूनी मामला हो या किन्हीं भी दो देशों में हो रहे विवाद हो। उसे हमेंशा स्वयंभू न्यायदाता के रूप में हस्तक्षेप करते देखा जा सकता है। कभी मानवाधिकार हनन, तो आर्थिक प्रतिबंध तो कभी कुछ...। इन्हीं सब कारणों से ही अमेरिका अपने को 'ग्लोबल पुलिस मैन' का संम्बोधन भी भाता है। इन सबके बीच मानवाधिकार, न्याय व समन्वय नहीं बल्कि उसका स्वहित सर्वोपरि होता है। उसका मानवाधिकार न्याय, झगड़ा वहीं दिखता है जहॉ उसका हित हो रहा हो। इसका ताजातरीन उदाहरण ईराक है। ईराक पर नजर दौड़ाने से यह बिलकुल साफ हो जाता है कि उसका स्वं हित कितने निम्नतर स्तर का है। यहॉ आधुनिक सुरक्षा उपकरणों से लैस अमेरिकी जवान हर कहीं मौजूद होने के बावजूद अराजकता का साम्राज्य कायम है। लुटेरों और असामाजिक तत्वों की तो लॉटरी खुल गई है। उन्हें दफ्तरों की पुरानी कुर्सियों से लेकर 'विलासिता की प्रतीक' स्पीड मोटर वोट तक लूटते देखा गया। ईराक के शहरों में शांति प्रिय और कानून पसंद लोगों का जीन दूभर हो गया है। खाद्य सामग्री की पहले से ही किल्लत झेल रहे ईराकी अब पानी की एक–एक बूॅद के लिए भी तरस रहे है। भीषण गर्मी में बिजली के गायब होने से नरक जैसे हालात बन गए है। अमेरिकी फौज का पूरा ध्यान अब बची खुचे सद्दाम हुसैन के लड़ाकों के प्रतिरोध के खत्म करने पर है।

वहॉ के वाशिदों के बयान से तसवीर बिलकुल साफ हो जाती है। उन्हें बरोजगार होने से अधिक चिंता, घर की मूल्यवान वस्तुओं और बहू–बेटियों की इज्जत को लेकर है। वहॉ के वांशिदे लगातार जागकर पहरा दे रहे है। उन्हें यह नहीं पता कि अगर लुटेरों ने उनके घर पर हमला बोला तो वे किस तरह उनका सामना करेंगें। लुटेरों को एके–47 राइफलों से लैस होकर बगदाद की सड़कों पर बेखौफ घूमते देखा जा सकता है। बुतरस के अनुसार अमेरिकी फौजियों ने 'मुक्ति दाता और मददगार' के नारे के साथ में बगदाद में प्रवेश किया था। अभी तक हमें कोई मदद तो नहीं मिली बल्कि लूट ही लूट दिखाई दी। बगदाद की आबादी पचास लाख से ऊपर है। किसी तरह की प्रशासनिक व्यवस्था न हर जाने के कारण अमेरिकी फौजियों के लिए भी

रातों रात कानून और व्यवस्था कायम कर देना मुमकिन नहीं है। अमेरिकी कमांडरों ने फौजियों को लूटपाट पर रोक लगाने के लिए निर्देश जरूर जारी किए है, लेकिन साथ ही यह भी कहा है कि कहीं भी अधिक बल का प्रयोग न किया जाए। अमेरिकी फौज की ओर से अस्पतालों मे ंलूट रोकने को जरूर गश्त के इंतजाम किए गये है।

rhdkusiuus vylgkQ ue lsscsclkbV cuokMkyh

bjkd ;q) ds nkSjku ln~nke gqlSu ds ckn lcls vf/kd pfpZr gksus okys bjkdh lwpuk ea=h vy lgkQ dks muds pkgus okyksa ds rhdkusiuus vylgkQ uke us csclkbV cuok MkyhA blds uke dh yon bjkdh baQkesZ'ku fefuLVj MkWV dkWe j[kk x;k gSA

xkSjryc gS fd bjkd ;q) ds nkSjku vy lgkQ Vsfyfotu ij c;ku nsrs gq, ges'kk fn[ksA muds c;kuck th dk viuk ,d vyx vankt FkkA muds c;ku esa dqN [kkl dkrsa ges'kk nksgjk;h tkrh jgh gSA tSls ;q) 'kq: gksrs gh vy lgkQ us dgk Fkk fd muds 'kq:vkrh vankt eqrkfcd ;q) ds nkSjku lHkh vesfjdh QkSt us cxnkn ds pkjksa vksj ls ?ksj fy;k FkkA rc vy lgkQ us dgk Fkk fd cxnkn dh tehu ij dksbZ Hkh vesfjdh dkfQj ekStwn ugha gSA

csclkbV ds iz/kku laiknd dkWu U;wtsaV ds vuqlkj vesfjdk lesr iwjs fo'o esa lgkQ ds pkgus okyksa dh deh ugha gSA lgkQ ds c;ku dkQh fnypLi gksrs FksA vkt Hkh yksx mUgsa cM+s pko ls lqurs gSA muds pkgus okyksa esa vesfjdh jk"Vª ifr tktZ MCY;w cw'k Hkh 'kkfey gSA lgkQ ij cuh bl csolkbV 'kq:vkr ds igys ?kaVs esa gh gj feuV djhc gtkj yksx ksa us rFkk dkn esa ;g pkj gtkj izfr ?kaVk rd igqWap xbZaA lgkQ ds pkgus okyksa dh lsok ds fy, csolkbZV dEiuh dks cM+s loZj dh lsok ysuh iMhA

अगला निशाना सीरिया होगा

ठाकुर कुर्सीवाला

सीरिया ने सद्दाम हुसैन की मदद के लिए आगे आकर भारी जोखिम मोल ले लिया है। इराक में सद्दाम शासन का अंत कर चुकने के बाद अमेरिका अब सीरिया के खिलाफ जिस तेवर का परिचय दे रहा है, वह केवल अन्यायपूर्ण ही नहीं है, बल्कि यह उसके विस्तारवादी इरादों का भी सबूत है। सीरिया पर आरोप है कि उसने सद्दाम सहित बाथ पार्टी के वरिष्ठ अधिकारियों को तो पनाह दी ही है, इराक के महाविनाश के हथियार भी छिपाकर वहॉ ले जाए गये है। अमेरिका ने जिन रासायनिक व महाविनाश के हथियारों के लिए इराक पर हमला किया था उसके प्रमाण भी लगभग डेढत्र माह की खोज के बाद नहीं प्राप्त कर सका है। यह अपने आप में अमेरिकी कमजोरी का प्रमाण है और सीरिया को चेतावनी देना उसकी कुंठा का। अगर एक बार को मान लिया जाए कि सिरिया के पास रासायनिक हथियार पहले से ही है या इराक से ले जाये गये तो अमेरिका अब तक कहॉ सो रहा था अचानक उसे सद्दाम का सहयोग करने के बाद ही क्यों दिखाई पड़ने लगा।

7 अप्रैल को बेलफेस्ट में हुई पेंटागन की बैठक के नतीजों पर भी गौर करें तो साफ पताचलता है अमेरिका का अगला निशाना सीरिया हो सकता है। यह बैठक सीरिया द्वारा सद्दाम हुसैन को व्यापक जनसंहार के हथियार उपलब्ध कराने के मसले पर केंद्रित रही।

जनवरी 2001 तक जार्ज डब्ल्यू बुश के आतंकवादी देशों की सूची में ईरान, इराक और उत्तर कोरिया के साथ सीरिया को नहीं रखा गया था, लेकिन अमेरिकी अधिकारी लगातार सीरिया के आतंकी ताल्लुकात के बारे में गम्भीरता से विचार करते रहे है। अमेरिकी रक्षा मंत्री डोनाल्ड रम्सफील्ड ने पिछले दिनों सीरिया पर सद्दाम को सैनिक सहायता और हथियार देने का आरोप भी लगाया था।

खैर अमेरिका के इस तेवर के पीछे उसकी यह आशंका तो खैर ही है कि सद्दाम सीरिया में छिपे हो सकते है। इसके और भी कारण हो सकते है। एक तो यही कि इराक पर हमले का सीरिया में जैसा तीखा विरोध हुआ है, उसने अमेरिकी सत्ता प्रतिष्ठान को नाराज किया है। फिर सीरिया को आंखे दिखाने के पीछे इस्राइल का आग्रह भी है। चूंकि दक्षिण लेबनान में सीरिया समर्थक हिजबुल्ला गुरिल्ले इस्राइल को कड़ी टक्कर देते है, लिहाजा मौका देखकर अब इस्रायल ने अमेरिका से सीरिया पर दबाब बनाने के लिए कहा है, ताकि उन गुरिल्लों को वहां से हटाया जा सके। इस मामलें में अमेरिका का दोहरापन भी उतना ही देखने लायक है। अमेरिका ने सीरिया पर सद्दाम की मदद का जैसा अरोप लगाया है, अफगानिस्तान पर हमलें के समय तालिबान की वैसी ही मदद पाकिस्तान ने की थी। सीरिया के बारे में तो यह कहा भी नहीं जा सकता कि उसने सद्दाम की मदद की है या नहीं, जबकि पाकिस्तान ने तो तालिबादन की खुली मदद की थी। पाकिस्तान में अलकायदा के आंतकवादी अब जिस तरह एक के बाद एक पकड़े जा रहे है, उससे भी आंतकवाद को प्रयोजित करने की उसकी प्रवृत्ति का पता चलता है। सवाल यह है कि एक ही तरह के जुर्म में दो देशों के प्रति अमेरिका का अलग–अलग रवैया क्यों? क्या इसलिए कि आतंकवाद को पालने पोसने के बावजूद पाकिस्तान अमेरिका के काम का है, जबकि सीरिया नहीं है? ऐसे में, सीरिया के प्रति अमेरिकी रवैयो को भला कैसे उचित माना जा सकता है।

6

शिक्षा का सही मापदण्ड क्या हो?

सपना रायजादा

भारतीय संविधान, भारतीय परिवेश की समस्याओं पर आधारित है, जिसमें असमानता को दूर करने की बात कही गयी है, कहना न होगा कि समन्वयवादी व्यवस्था की आधारशीला समता मूलक शिक्षा है, किसी वस्तु विशेष के अंग को समझने के लिए हमें पहले यह जानना होगा कि वास्तव में वस्तु विशेष का मतलब क्या है, तत्पश्चात ही हम उसके सही स्वरुप तथा मापदण्ड का निर्धारण कर पायेंगे।

"शिक्षा वह प्रणाली है जो मनुष्य के मस्तिष्क में सुधार करती है एवं आत्मा को पवित्र करती है।"

शिक्षा मनुष्य की पूंजी है जिसे लेकर मनुष्य अपने जीवन पथ पर सुगता से आगे बढ़ता है। वास्तव में शिक्षा मानवीय विकास का एक प्रभावशाली साधन है, शिक्षा जड़ को चेतन बनाने की प्रक्रिया है।

अब प्रश्न यह उठता है कि शिक्षा नीति में परिवर्तन की कौन सी दिशा और प्रक्रिया अपनायी जाये जो शिक्षा में फैली तमाम विसंगतियों का निवारण कर सके। इस प्रश्न के सम्यक समाधान के लिए हमें कतिपय मनीषियों के विचारों में उतरकर शिक्षा के अभिप्राय व मानदण्डों की परखने के बाद समाधान निकाला जा सकता है। जैसे—महर्षि अरबिन्द शिक्षा की विवेचना करते हुए कहा—"सच्ची और सजीव शिक्षा केवल वही कही जा सकती है जो मनुष्य की इस तरह से सहायता करें की उसके अन्दर जो भी शक्ति सामर्थ्य निहित है वह बाहर अभिव्यक्त होकर उसके जीवन में अपन पूरा लाभ प्रदान करें तथा मनुष्य जीवन का जो भी सम्पूर्ण उद्देश्य और सम्भावना है, उसकी संसिद्धि के लिए तैयार करें।"

स्वामी विवेकानन्द —"सभी प्रकार की शिक्षा और अभ्यास का उद्देश्य निर्माण ही है। वस्तुतः जिस अभ्यास से मनुष्य की इच्छा शक्ति का प्रवाह और प्रकाश संयमित होकर फलदायी बन सके, उसी का नाम शिक्षा है।"

इस प्रकार शिक्षित व्यक्ति मुक्ति का द्वार खोल लेता है। वर्तमान समाज में अशिक्षित व्यक्ति का कोई अस्तित्वव नहीं है, भले ही वह पूँजीपति क्यों न हो। सिर्फ धन सम्पन्न मात्र हो जाने से ही मनुष्य समाज का प्रमुख व्यक्ति नहीं कहलाता, प्रमुख व्यक्ति होने के लिए मनुष्य को धन सम्पन्न होने के साथ—साथ शिक्षित भी होना पड़ता है।

कई उपनिषदों में बार—बार यह प्रार्थना की गई है कि—"मैं स्पष्ट व पर्याप्त सुन सकूँ तथा देख सकु इस प्रकार बेहतर, पवित्र, सूक्ष्म एवं गहराई तक देखना सुनना आकांक्षा करना ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है।" भारतीय सन्दर्भ में शिक्षा का यह उद्देश्य पूरी तरह सफल नहीं हो पाया है। शिक्षा मात्र किताबी बन कर रह गई है। किताबी पन और व्यवहारिक जीवन में बहुत अन्तर है। वर्तमान की किताबी शिक्षा के दुष्परिणाम उजागर हो चुके है यह शिक्षा बेरोजगारी को बढ़ाती है जिसके फलस्वरुप ही समाज में आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि विकट समस्याओं का जन्म हुआ है। यह शिक्षा ऐसे नवजवान उत्पन्न करने में पूर्णतया असफल सिद्ध हो चुकी है जो समाज निर्माण में एक सशक्त कड़ी की भूमिका अदा कर सके। डा0वी0सी0 सुन्दर का इस शिक्षा के सन्दर्भ में मत है कि—"छात्रों के ऊपर इतने विषय और किताबों का बोझ लाद दिया गया है कि उसी को संभालने में उनके जीवन के अनेक बहुमूल्य क्षण नष्ट हो जाते है।" कहना न होगा कि शिक्षा के ढॅाचे और स्तर का उतना महत्व नही होगा जितना विद्यार्थी की आत्मनिर्भरता और आत्मिक ज्ञान का। इस प्रकार आज की शिक्षा का ढॅाचा राष्ट्रीय स्तर पर एक होना चाहिए जिसके द्वारा भारतीय जन—जीवन को वैज्ञानिक चिन्तन से जोड़ना होगा। अर्थात 'स्कूल जाने वाले तमाम बच्चे यदि वे किसी भी कर्म क्षेत्र में उतरे उनका दृष्टि कोण वैज्ञानिक हो अतः विज्ञान की पढ़ाई की बच्चों के पाठ्यक्रम में पहली श्रेणी में लाना होगा।"

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। तकनिकी ज्ञान अर्जन का युग है। केवल इतिहास, भूगोल और साहित्यिक विषयों के ज्ञान के आधार पर हम आगे नहीं बढ़ सकते। अन्य विकसित एवं विकासशील देशों के साथ विकास के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकते है विद्युत ऊर्जा, परमाणु सरंचना, रसायन, कृषि विज्ञान आदि ऐसे क्षेत्र है जिनके सम्बंध में आधुनिकतम टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर अचम्भित कर देने वाले आविष्कार किये जा रहे है। अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत प्रमुख भूमिका अदा कर रहा है। भाष्कर, रोहिणी, एपल, इनसेट जैसे अंतरिक्ष यान अन्तरिक्ष में भेजने का गौरव भारत को प्राप्त हो रहा है। यह सब तभी आगे भी सम्भव हो सकता है जब कि आरम्भ से ही विद्यार्थियों को विज्ञान की शिक्षा अनिवार्य रुप में दी जाती रहे। आज की शिक्षा में जिन मौलिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की सर्वाधिक आवश्यकता है वे तीन कोटियों में विभक्त की जा सकती है—

1. आत्म निर्भरता और श्रम की महत्ता स्वीकार करने की भावना जागृत करना।

2. देश भक्ति व सामाजिक भावना जागृत करना।

3.भारत की सांस्कृतिक एकता और जीवन मूल्यों का समुचित ज्ञान।

कुल मिलाकर आज की शिक्षा में ऐसा आमुल—चूल परिर्वतन करना है जिसके द्वारा एक ओर शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा छात्रो के मानस पटल पर अंकित हो और दूसरी ओर उनके प्रत्यक्ष परिश्रम के कारण देश के नव निर्माण में सहायता प्राप्त हो।

इस प्रकार विद्यार्थी में योग्य कर्तव्य भावना अनुप्राणित करने के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली ध्यानयोन्मुख होनी चाहिए। अन्त में यही कहना चाहुॅगी कि शिक्षा का कार्य अनुभव और आत्मनिर्भरता की ओर मोड़ना चाहिए। शिक्षा का जो भी स्वरुप हो शिक्षा ऐसी हो जो मनुष्य के अन्दर गुण को विकसित कर सशक्त समाज का निर्माण कर सके जिससे कि हम अपने को एक सभ्य, सुशिक्षित तथा सुदृढ़ समाज एवं देश का हिस्सा होने में शर्म नहीं फक्र महसूस कर सके।

जन सामान्य की समस्याओं से रूबरू होने वाला व्यक्तित्व है : चौधरी परशुराम निषाद

0 जी.के.द्विवेदी

USrkvksa ds uke ls ?k`.kk djus dk yhvke turk tc vkt Hkh fo|lh ,sls O;fDrRo dks ns[krh gS tks turk dk leL;kvksa ls :c: gksrk jgrk gS] muds mRZ dks viukmrZ le>rk gSA muds lkFk gj iy pyus dks rS;kj jgrk gS] muds gj iy dk lkFkh gS rks igys rks ,d k,d mUgsa fo'ok lugha gksrk gS fdokLro esa dksbZ vkt Hkh ,slk usrk gS ysfdu bl vkn'kZ dks ;FkkZFk esa cnyrs tcns[kk tkrk gS rks fo'okl djus ij etcwj gksuk iM+rk gSA ,sls gh O;fDrRo dk uke gS pkS/kjh ij'kqjke fu"kknA 5 flrEcj 1964 dks tUe sa Jh ij'kqjke fu'kkn ds Lo0 ykyk jke fu'kkn FksA mudh izkjfEHkd f'k{kk izkbZejh ikB'kkyk rkjkxat esa gqbZA mUgksus a lu~ 1979 esa jk/kk je.k baVj dkWyst] nkjkxat ls gkbZ Ldwy dh ijh{kk mRrh.kZ dh] lu~ 1983 esa lh-,-dh baVj dkWyst] flfoy ykbZUl ls baVj dh ijh{kk iklch rFkk xztq,'kumUgksssaus 1987 esa dkuiqj fo'ofo|ky;] dkuiqj orZeku uke N=ifr 'kkgqegkjkt fo'ofo|ky;] ls mRrh.kZ dhA rnksijkUr lh-,e-ih fMxzh dkWyst] bykgkckn ls ,y-,y-ch-dh fMxzh gkWfly dhA

mudk dksbZ Hkh ikfjokfjd jktuhfrd ifj{ks= ugha Fkk;k;ksa ads fchUgsa fojklresa jktuhfr ugha feyhA cpiu ls lekftd dk;ksZ esa ru eu ls tqM+s PkkSS/kjh ij'kqjke fu'kkn 1986 esa cgqtu lekt ikVhZ dh lnL;rk xzg.k dh rFkk 1988 dh-,l-ih- bykgkckn ds uxj egkea=h pqus x;sAbl in ij 1991 rd jgsa 1991 esa mUgsa bykgkckn dk ftyk egklfpo fu;qDr fd;k x;kAbl in ij og 1996 rd jgsA 1986 esa cgqtu lekt ikVhZ ls gh

djNuk fo/kkulHkk {ks=ls orZeku fo/kk;d dqaoj jsorh je.k flag ds f[kykQ pquko yM+kA mUgsa dby 37000 erizkIr gq, rFkk mUgksaus lsd.M iksy fd;kA

vDVwcj 2000 esa fVdV ds fy, dh-,l-ih- mik/;{k ,oa orZeku eq[;ea=h ogu lqJh ek;korh us iSlksa dh ekax dh rks os cgqtu lekt ikVhZ ls bLrhQk ns fn;sA vDVwcj 2000 esa viuk ny Tokbu dj fy;kA mUgsa viuk ny ;qok okfguh dk izns'k v/;{k fu;qDr fd;k x;kA 2001 ds vke pquko esa viuk ny ls 'kgjnf{k.kh fo/kkulHkk v/ ;{k ia0 ds'kjhukFk f=ikBh ds f[kykQ pquko yM+s rFkk dM+h VDdj nhA orZeku viuk ny esa mRBk iVdk ds chp Hkh og vius in ij cus gq,gSA

mUgksaus os Sls rks {ks= gj oxZ dh leL;kvksa dks lquk vkSj ml ij ;Fkk lEHko mudk lg;ksx Hkh fd;kA ysfdu ncaxks dh ncaxbZ ls ncs dqpys fu'kkn lekt ds fy, mUgksaus vcd Yiuh; la?k"kZ fd;kA 1989 ls vc rd fu'kknksa dh tehu ij dCtk tek;s ekfQ;kvksa ls mudh tehu dks NqM+k;kA jkt fu'kkn jkt dh ewfrZ

dh LFkkiuk djok;kA ;gHkk jro"kZ esa izFke ewfrZ gSA vke turk esa mudh xgjh iSB gSA blh ds dkj.k vki tc muds ?kj tk;s dksbZ u dksbZ >qaBtu lewg muds ikl viuh leL;kvksa ds fy, fujkdj.k ds fy, cSBk feysxkA pkgsa iqfyl }kjk fu'kknksa dks vuko';d izrkfM+r djus dks] vFkok fdUgha nsk iM+ksfl;ksa ds chp vkil dk >xM+k gksA dksbZ tehu dk yQM+k gks] ;k vke tu dk dksbZ mRihM+u gks vki gj txg bl O;fDr dks ikrk tk;saxsA pquko dky esa rks lHkh usrk vksa ds ;gka Hkh M+ jgrh gS ysfdu vxj izR;k'kh gkj tk, rks ml ds ogka ml ds [kkl flikg lykgdkj ksa ds kNksM+ dj dksbZ vU; fn[kkbZ ugha iM+rkA ysfdu pkS/kjh ij'kqjke fu'kkn dk O;fDrRo o d`frRo us mu ds pquko gkjus] fdlh in ij u jgus ds ckotwn HkhM+ dk utkjk ns[kus dks feyrh tkrk gSA jgu lgu esa fcydqy lk/kkj.k thou ;kiu djus dk ys pkS/kjh ij'kqjke fu'kkn dks ns[kdj dgha ls Hkh ;gugha yxrk fd os vkt ds usrk gSA uuk Sdj pkdM+ vkSj u BkV ckVA fcydqy lk/kkj.k thou ;kiu djus dk ys fu'kkn vkt ds usrkvksa ls fcydqy vyx utj vkrs gSA

orZeku eq[;ea=h lqJh ek;korh ds 'kklu dky ds dkjs eas iwNus ij os dgrs gSß lqJh ek;korh ds 'kklu dky esa dksbZ xjhcksa dk dk;Z ugha gks jgk gSA ds oy ekfQ;kvksa dk dsydkyk gSAÞ

muds O;fDrRo o d`frRo dks ns[kdj rks ,slk yxrk gS fd vxj mUgsa ,d ckj fdlh in dks lqHkksf"kr djus dk ekSdk fn;k tk, rks tulekU; dh leL;kvksa dks fuokj.k vn~Hkwr ;ksX;rk us ldrs gSA

कहानी

अपना दीन अपनी दुनिया

शकुन्तला सरन

bl nqfu;k dks ns[krs gq, gh] esjh varjax lgsyh dgrh gS ?kkV&?kkV dk ikuh ihuk mruk cqjk ugha] vxj og ekax fLUnwj iM+us ds ckn gksA og dgrh gS nhu viuh txg gS vkSj nqfu;k viuh txgA mldk nkok gS fd mlus nhu Hkh ns[kk gS vkSj nqfu;k HkhA

मैं पच्चीस वर्ष की अविवाहिता हूं। देखने में बुरी भी नहीं। एक औरत के लिए पच्चीस की उम्र ऐसी नहीं होती, जिसे आप कच्ची उम्र कहें। वह दीन दुनिया को समझती है। मेरे सामने दीन है, मैं हर इतवार का व्रत रखती हूं अलोना खाती हूं। सावन के मास का सोमवार कब रखना शुरू किया कुछ ठीक से याद नहीं। हर वर्ष नेम से व्रत रखती हूं विल्वपत्र पर चन्दन से राम नाम लिखती हूं। दूध और पानी शिवजी पर चढ़ाती हूं और उनके पैरों पर गिरकर वरदान मांगती हूं "हे भोला नाथ, मुझे वर दो! हे पार्वती मैया मेरी मांग में सिन्दूर डालो।" मेरी अंधी मां नित्य नेम से ठाकुर जी की पूजा करती है, अपनी बेटी के लिए वर मांगती है, पर वह है कि नहीं मिलता, तो नहीं मिलता।

दीन से थक कर दुनिया की ओर देखती हूं। दुनिया वाले कहते है, कि मेरी मां लाला प्यारे लाल के घर बर्तन मांजती थी और सेठानी के कामों में मदद करती थी। मेरी मां का रंग तो सांवला था पर अंग अंग सौन्दर्य के रंग में रंगा, अपने यौवन के मद में चूर था। लाला भले आदमी थे, चाहे धोखे में ही पकड़ा हो, एक बार हाथ पकड़ा तो फिर मरते समय ही छोड़ा। लाला के पास पैसा था, हिम्मत थी, उसी के बल पर लाला ने मेरी मां के पीछे बड़ी–बड़ी लड़ाइयां लड़ी, घर से, समाज से, और मरते दम तक सर नहीं झुकाया। यही लाला मेरे पिता थे। मेरी मां के अलावा लाला की गोरी मोअी सेठानी है, बड़ी हवेली है, बारह–पन्द्रह दुकानें हैं। लम्बा चौड़ा व्यापार है, बेटे बेटियां हैं, बहू दामाद है। सब कुछ भरा पूरा। मैं और मेरी मां इस भरे पूरे का अंग नहीं। हमारी छोटी सी हवेली है जिसमें मैं हूं मेरी अंधी मां है और हामरे खाने पीने का सहारा, हवेली के किरायेदार। लाला स्वर्गवासी होने से पहले यह सब कर गये थे।

मां का कहना है कि मैं बनिए की बेटी हूं इसलिए बनिये के घर में ब्याही जाऊं, चाहे जिन्दगी भर कुआंरी ही बैठी रहूं। न मेरे लिए कोई बनिये का बेटा होगा, और न मेरी मांग में सिन्दूर पड़ेगा।

खैर यह तो मां की बात है उसी के साथ चली जायेगी। रह जायेगी, यह हवेली और हवेली की मालकिन मैं। हो सकता है तब हवेली की मालकिन को बहुत से वर मिल जांय।

मेरी एक सहेली का कहना है, अगर मेरी मां अपनी जवानी में ही अंधी न हो जाती तो, और मुझे तेरह वर्ष की उम्र से ही दाब कर रखती, तो क्या मुझे दुनिया में वर ही न मिलता? पर मैं तो ब्याह की उम्र होने से पहले ही, घाट घाट का पानी पी चुकी थी।

इस दुनिया को देखते हुए ही, मेरी अंतरंग सेहेली कहती है कि घाट घाट का पानी पीना उतना बुरा नहीं, अगर वह मांग में सिन्दूर पड़ने के बाद हो। वह कहती है दीन अपनी जगह है और दुनिया अपनी जगह। उसका दावा है कि उसने दीन भी देखा है और दुनिया भी। भगवान जाने।

यह दीन का ही सहारा है कि आज तक मैं हट्टी, कट्टी जवान बैठी हूं। वरना घुट घुट कर मर गई होती। इन चार वर्षो यानी इक्कीस से लेकर आज तक ही पीड़ा भगवान के सहारे ही सही है। लड़कपन की बात जानें दें, जब जिसकी गोंद में जी चाहा बैठे, खेले और अपने घर आ गए। अब मैं आपसे क्या छिपाऊं, अब तक मेरे जीवन में बीसियों व्यक्ति आए और गए। मैं औरों की "राम राम छिःछिः।" नहीं सुनती। अपने दीन की बात है कि मुझे आज तक दीन को समझने वाला कोई पुरूष नहीं मिला। बस भटकन हीं रही।

आपको चाहे विश्वास न हो पर बात सही है,कि पिछले चार वर्षो से मेरा जीवन बिलकुल सूना है। लांछनों का टीका लगाए मैं बराबर इस खोज में रही कि कोई तो माई का लाल ऐसा मिले जिसे अपने को सौंप कर मैं निश्चिन्त हो जाऊं। अब तो मैं बिलकुल जान गई हूं कि सौंपने में ही औरत की गति है। मैंने अब तक एक नहीं अनेक पुरूषों को देखा है, पर बाहर से, भीतर से नहीं। अगर, मैं आदमी का मन, अन्तर देखे बिना मर गई तो नारी जीवन अकारथ जायेगा। इतने भीतर से कि उसमें मुझमें अन्तर न रहे। शायद मां इसी को ब्याह कहती है। पर मैं पूछती हूं क्या मांग में सिन्दूर भर देने से अन्तर मिट जाएगा?

मेरी एक और सहेली है, जिसने ब्याद नहीं, पहले ही कई घाटों का पानी पिया था। पानी पीते पीते ही उसे एक ऐसा घाट मिल गया, जहां जनम जनम की प्यास बुझ गई। फिर क्या था। एक दिन वह दीन और दुनिया दोनों को आग लगा कर भाग गई।

मेरा पक्का विश्वास है भागने वाला कायर है, चोर है। जो कुछ मिला है उसे दुनिया को दिखा कर रहो तो दीन है। कहीं दुनिया से अलग भी कोई दीन है। मैं अपना दीन नहीं छोड़ना चाहती, इसलिए दुनिया भी नहीं छोड़ती। भले ही इस दुनिया में दीन और दुनिया को एक साथ सम्हालने वाला न मिले।

खैर! यह तो हुई पोथियों की बातें। पर मेंरे मन की बात यह है कि मैं चार वर्षो के

अकेले पन से घबरा गई हूं। दीवारों से सर फोड़ने को जी चाहता है। स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ, निर्मल जल जरूरी है, पर जाती हुई ज़िन्दगी को बचाने के लिए, गंगा जल न मिले और नाली का पानी मिले तो दो बूंद मुंह में टपका कर जिन्दगी तो बचाई जा सकती है। घबराहट ही जानो, मैंने बिना सोचे समझे नाली में मुंह डाल दिया।

भाग्य कहिए या भगवान की कृपा, मैंने घबराकर जिसे नाली का पानी समझा था वह तो गंगा जल से भरा घड़ा था। मैं धन्य हो गईं। छक कर पिया जिसे खोजती थी, आखिर मिल ही गया। 'जिन खोजा तिन पाइयां।' और मुझे तो गहरे पैठने की भी जरूरत न पड़ी। वह ऐसा था कि बाहर से देखा, और भीतर से पहचाना जा सके। दिन दिन इतना मेरे पास आता गया कि तन का ही नहीं मन का भी अन्तर मिट गया।

मां चार बोझ लकड़ी की बाट देख रही है। लाला की छाया में उसने दीन, दुनियां दोनों से आंखे मूंद ली थी। लाला ने उसे हाथों हाथ सम्हाला था। मेरा और उसका एक होना मां सह न सकी। आंखों में, गुस्से और अपमान के आंसू भर कर बोली, "मैंने कहार के घर में जनम लेकर, बनिये का घर सम्हाला और तुझ बनिये की बेटी को चमार मिला।" मां रोई पीटी। लाला की इज्ज़त की दुहाई दी। बिरादरी के बेटों और उनके बापों को कोसा। ज़हर खाने की धमकी दी, गंगा मैया की गोद मांगी।

बड़े संकट में पड़ी। मां का साथ देना बहुत जरूरी था, वह मर गई होती तो बात और थी। सोचा उससे सलाह लूं। आप सच माने, वह देवता है। दुनिया और दुनिया वालों की बातें नहीं जानता। मेरी बातें सुनकर, बड़े भोले पन से बोला, "जैसा तुम और मां ठीक समझा करो। मुझसे कहो तो कहीं दूर चला जाऊं, तुम्हारी याद के सहारे ही ज़िन्दगी काट लूंगा।"

मां आखिर मेरी मां ही है। रात गए मैं उसके पास गयी। वह सोयी न थी। न जाने कैसी पीड़ा थी या जलन थी जिसमें वह छटपटा रही थी। मैं किसी को छटपटाता नहीं देख सकती। मां को समझाया, तू बिरादरी का मोह छोड़, तूने ही कौन सी बड़ी ऊंची जात में जन्म लिया था। मैं तो बिना ब्याह किए ही उसकी हो चुकी। ब्याह तो दुनिया को समझाने दिखाने की बात है। अगर तू बहुत दुखी है, तो तेरे जीते जी मैं चमार बिरादरी में ब्याह न करूंगी। बस अब हुई तेरे मन की। ले वेदना हरण गोली खा और सो जा। मन न दुखी कर। सबेरे तुझसे बात करूंगी।

मां तो सो गई, ऐसा सोई कि कभी न उठी। जान पहचान भाई बिरादरी वाले आए, मां को ले गए। मैं कलेजा फाड़ फाड़ कर रोई। बच्चे अपना घरौंदा अपने आप बिगाड़ देते हैं, फिर मां की गोद में सिसकियां लेते हैं। अजब दुनिया है।

कैसे संयोग की बात है। मेरी मां बताती कि जब मैं तीन महीने की पेट में थी, तभी मेरे बाप ने, मां को इस हवेली में लाकर रक्खा था। रसोई के पास वाली कोठरी में मेरा जन्म हुआ था। मेरा भी चौथा महीन परसों से लगेगा। और मेरी बेटी भी वहीं जन्म लेगी। मैंने उसे सब बता दिया है, और यह भी कह दिया है, कि अगर वह देवी देवता, और चार आदमियों के सामने मेंरी मांग में सिन्दूर नहीं भरना चाहता तो न भरे। मुझे इसकी परवाह नहीं। पर वह यहीं आकर रहे, मेरे साथ, आने वाली बच्ची के साथ। रही दुनिया की बात, तो वह मैं सम्हाल लूंगीं।

वह भी कितना भोला है। कहता है हम दोनों साथ तो रहें। पर मैं अपनी होने वाली बेटी को अपनी और उसकी बेटी न कहूं। मैं कह दूं कि हम यह लड़की अनाथालय से लाये हैं। यह यह मशहूर कर दूं कि मेरी सहेली जो भाग गई थी, अब बीमार है। मैं उसकी देख भाल करने, सेवा करने को जा रही हूं। और प्रसव काल तक कहीं और रहूं। बाद को बेटा या बेटी जो हो उसे अपनी सहेली का कहकर पालूं। अपने से ही छल, आदमी की जात ही छलिया है। मैं अपने बच्चें को अपना बच्चा न कहूं पति को पति न कहूं डरपोक कहीं का। पगला दुनिया से डरता है , जो डरा सो मरा।

आज सबेरे से जी घबरा रहा है। वह दो दिन से नहीं आया हैं। वैसे तो दिन में एक दो बार जरूर आता था। कोई पास नहीं है नहीं

ग़ज़ल

डॉ0 राजकुमारी शर्मा 'राज'

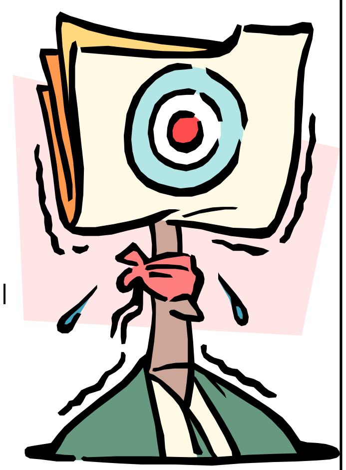

जो गिरे साथ था खुश्बुओं की तरह।
उसने छोड़ा मुझे घुघरूओं की तरह।।
उसकी यादें चमकती रही रात भर।
मेरे चारों तरफ जुग्नुओं की तरह।।
देखता है ज़माना उसे आज कल।
ज़िन्दगी के नए पहलुओं की तरह।।
इश्क़ पर तब्सिरे आप बेशक करें।
कुछ न बोलें मगर मजनुओं की तरह।।
जिन्दगी तेरे खाके में भरने नहीं।
रंग हम को कभी साधुओ की तरह।
खून तहजीब रोई नफ़स दर नफ़स।
जब जुबानें चलीं चाकुओं की तरह।।

डाक से आवेदन पत्र भेजे जाने पर विलम्ब होने की दशा में सम्बंधित व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

डाक से आवेदन पत्र भेजे जाने पर विलम्ब होने की दशा में सम्बंधित व्यक्ति को क्या करना चाहिए? इस सम्बंध में एक रिट याचिका में चर्चा हुई। याची ने बी.टी.सी. परीक्षा के लिए आवेदन पत्र रजिस्टर्ड डाक से भेजा। डाकघर की किसी त्रुटि से आवेदन पत्र विलंब से पहुँचा। कार्यालय ने लेने से इन्कार कर दिया। याची ने तत्काल कोई कार्यवाही नहीं की और एक महीने के बाद रिट याचिका प्रस्तुत की। इस बीच बी.टी.सी. चयन का परिणाम घोषित किया जा चुका था। उच्च न्यायालय ने कहा कि याची तत्काल न्यायालय की शरण लेते तो उनके मामलें में आवेदन पत्र पर विचार करने का निर्देश दिया जा सकता था, लेकिन परिणाम घोषित होने के बाद कोई उपचार शेष नहीं रह गया।

ओम प्रकाश प्रति डायरेक्टर एजूकेशन 2002 (46) ए.एल.आर.–322

सरकारी मशीनरी द्वारा निराधार आपत्तियां उठाने पर

सरकारी मशीनरी कभी–कभी ऐसे आपत्तियां उठाती है जिसके कारण लोगों को अकारण उच्च न्यायालय की शरण मे ंजाना पड़ता है। प्राइमरी स्कूल में सहायक अध्यापकों की नियुक्ति से सम्बन्धित एक ऐसा ही मामला उच्च न्यायालय पहुँच गया। कानपुर नगर में प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों की नियुक्ति हेतु विज्ञापन प्रकाशित हुआ। याची ने आवेदन पत्र भेजा। उसे यह सूचित किया गया कि कानपुर का निवासी होने पर भी उसने बी.टी.सी. ट्रेनिंग रामपुर से ली है। इस कारण उनको कानपुर में नौकरी दिये जाने पर विचार नहीं किया जा सकता है। उसे कानपुर से बी.टी.सी. की ट्रेनिंग करनी चाहिए थी। याची ने विवश होकर रिट याचिका प्रस्तुत की। उच्च न्यायालय ने रिट याचिका स्वीकृत करते हुए अपने निर्णय में लिखा कि बी. टी.सी. ट्रेनिग कहां से की गयी है, इसका कोई प्रभाव नहीं है। शिक्षक पद पर नियुक्ति हेतु बी.टी.सी. ट्रेंनिग होनी चाहिए। याची ने कहां से ट्रेंनिग की है, इसका कोई प्रभाव नहीं है। अधिकारियों ाके यह आदेश किया गया गया कि याची के आवेदन पत्र पर विचार करें और चयन प्रक्रिया में उसके नाम को सम्मिलित किया जाय।

नीरज त्रिवेदी प्रति उत्तर प्रदेश राज्य 2002(46) ए.एल.आर–154

साभारः पत्राचार शिक्षा समाचार

दोस्तों इस बार से हम यह एक नया स्तम्भ प्रारम्भ कर रहे है। इस स्तम्भ के तहत जनसामान्य से संबंधित उच्च न्यायालय की याचिकाओं और उनके निर्णय को प्रकाशित करेंगे। हमारा यह स्तम्भ आपको कैसा लगा अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत करावें सम्पादक

तो उसकी कोठरी तक भेजती। बुखार में ही न पड़ा न हो। रात को भी राह देखती रहीं

दूसरे दिन जमादारिन को चार पूड़ी और एक रूपया देकर उसे बुलाने को कहा। जमादारिन ने ज्यादा देर न लगाई, लौट कर बताया, "बम्बई से उसकी नौकरी का तार आया था। पक्की नौकरी लगी है, सो चला गया कोठरी छोड़ कर।"

"चला गया? सब सामान लेकर?"

"हां।"

जमादारिन चली गई। मैं जहां की तहां बैठी हूं। मुझे विश्वास हो गया कि वह मुझसे पीछा छुड़ा कर भागा है। और भी लोग मुझसे पीछा छुड़ा कर भाग चुके हैं। पर इसका पीछा मैं नहीं छोड़ूगी। बम्बई दुनिया के बाहर नहीं है, भागने वाले। मैं जानती हूं इस समय तुम्हार हृदय में बड़ी पीड़ा होगी। हर भागने वाले को अनन्त पीड़ा का सामना करना होता है। मेरे सब कुछ। मेरी होनी वाली बेटी के पिता, मैं तुम्हारी पीड़ा नहीं देख सकती। मैं वेदना हरण की गोली लेकर तुम्हारे पास जरूर आऊंगी।

दो, चार, दस दिन बीत गए हैं। हवेली में ऊपर पड़ी रहती हूँ। किराएदारों की खुसर पुसर नहीं सुनती। सुनूं भी क्या? क्या मेरे बारे में लोग मुझसे ज्यादा जानते है? जितनी बातें वे करते हैं, वे मेरी कुछ बातें ही तो हैं। जिन्हें बार–बार दुहराते हैं। मेरी बहुत सी बातें तो उन्हें मालूम ही नहीं।

कभी कभी बहुत जी भर आता है। मन होता है भगवान के पैरों पर गिर कर अपने पापों की क्षमा मांगू। फिर सोचती हूं भगवान से क्या कहना उन्हें तो राई रत्ती सब पता है। उसी ने तो मेरा कलेजा ईंट पत्थर का बनाया है। मैं क्या करूं।

दुनियां को मैं नही डरती। जानती हूं चार दिन बाद सब भूल जायेगी। याद रखने वाली होती तो चलती यह दुनिया? फिर मैं कोई अनोखी नहीं हूं। सैकड़ो पड़ी है सभी अपने पेट में पलते पाप को पैदा कर गला घोंट कर, नदी तालाब में बहा नहीं देती? तो क्या मैं अपने बे बाप के बच्चे को पाल नहीं सकती? मुझे अपना दीन मालूम है, और यह भी कहती हूं कि आज कलयुग में भी दुनिया से इतना दीन नहीं उठ गया है कि कोई अपने बच्चे को पाले और दुनिया पालने न दे। इस पर भी अगर ये दुनिया मुझे छोड़ती है तो शौक से छोड़ दे। बसा लूंगी मैं अपनी दुनिया। बना लूंगी मैं अपना दीन। हवेली तो अपनी ही है। न बनिये ब्राहमण बसेंगे। भंगी चमार तो बसेंगे।

नेपाल की सीमा के पास तराई में बसा 'महदेवा दुबे' गॉव देर से ही सही अपनी असधारण उपलब्धि का जश्न मना रहा है।

नगेन्द्र दूबे

एक हजार आबादी वाले इस गांव के नाती को साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला है। उत्पीड़ित समाज के उपेक्षित इतिहास को उजागर करने वाले सर विद्याधर सूरज प्रसाद नयपाल के की तथा अपने अनुभवों को भारत पर अपनी पहली पुस्तक 'एन एरिया आफ डार्कनेस' एक अंधकारमय इलाका में लिपिबद्ध किया। किताब का एक अध्याय 'विलेज आफ दुबेज' दुबे है। मंदिरमें शंकर–पार्वती, गणेश और कार्तिकेय की मूर्तिया है। कपिलदेव दुबे की ग्यारह संताना में दो पुत्र, नौ पुत्रिया थी। उनकी एक पुत्री

साहित्य में नोबल पुरस्कार जीतने वाले दूसरे भारतीय विद्याधर नायपाल

नाना कपिलदेव दूबे 'महदेवा दुबे' गॉव से ही त्रिनीनाद गये थे और वहॉ बस गये।

महदेवा दुबे गांव एक उपेक्षित गांव है। गांव की सड़के उबड़–खाबड़ है, पेयजल की सुविधा नदारद है, चौबिस घंटे में बिजली मुश्किल से एक दो घंटे के लिए आती है, गांव का सार्वजनिक तालाब गंदगी से पटा है लेकिन गांव वालों के लिए यह समय गांव की दुर्दशा पर रोने को नही सर विद्या धर नयपाल की उपलब्धियों पर गर्व करने का है। गांव के नाती 'नयपाल' को नोबल पुरस्कार मिला है। यह समाचार गांव वालों को मार्च में मिला। गांव कें बुजुर्गों के मुताबिक लगभग सौ साल पहले कपिलदेव सात समुन्द्र पार त्रिनिनाद गये थे। पिछले महीनों जब सर विद्याधर नयपाल भारत यात्रा पर आये तो उनके पैतृक गांव की खोज खबर शुरू हुई। गांव के लोगों को बस इतनी ही जानकारी थी कि त्रिनीनाद में बसे दूबे परिवार का कोई लड़का लेखक है। जिसका नाम विद्याध ार नयपाल है जिन्हें इस वर्ष रविन्द्र नाथ टैगोर के बाद साहित्य का नोबल पुरस्कार प्राप्त किया है। सर विद्याधर नयपाल ने अपने लेखन के शुरूआती दिनों सन् 1962 ई० में अपने पैतृक गांव का दौरा भी किया था। उनकी मां द्रोपदी कपिलदेव ने गांव का पता सौपते हुए नयपाल से आग्रह किया था कि वह पैतृक गांव अवश्य जाये। नयपाल ने मां की आज्ञा का पालन करते हुए अनमने ढंग से गांव की यात्रा लोगों का गांव इसी गांव पर केन्द्रित था।

इस गांव में दुबे लोगों के अनेक परिवार है तथा इनकी प्रत्येक सदस्य के साथ नयपाल के साथ दूर की रिश्तेदारी जुड़ी है। रामचन्द्र दुबे इन दिनों नयपाल के नाना की जमीन की देखभाल कर रहे हैं। नाना द्वारा बनवाये गये दो छोटे मंदिर भी उन्हीं की देखरेख में है। 1962 में जब नयपाल इस गांव में आये थे तो उनकी भेंट रामचन्द्र दुबे से हुई थी। रामचन्द्र नयपाल की तरह ही कपिलदेव दुबे के नाती है।

रामचन्द्र दुबे के पास कुछ पुराने फोटोग्राफ भी है। एक फोटो में धोती, कुर्ता, सफेद टोपी, गले में रूद्राक्ष की माला पहने कपिलदेव दुब अपनी धर्मपत्नी सुगी देवी के साथ है।

कपिलदेव दुबे एक गिरमिट मजदू के रूप में त्रिनिनाद गये थे लेकिन उन्होंने वहां पडिताई कर बहुत नाम और धन कमाया। वे पैतृक गांव को नहीं भूले तथा गांव नियमित रूप से ध नराशि भेजते रहे। उन्होंने गांव में दो छोटे मंदिर बनवाये जिस पर उनका नाम अंकित द्रोपदी कपिलदेव थी। जो सर विद्याधर नयपाल की मां है। कपिल देव दुबे के दो पुत्र शंभोनाथ और रूद्रनाथ त्रिनिनाद के सार्वजनिक जीवन में बहुत सफल व्यक्ति थे। शंभोनाथ एक प्रसिद्ध वकील और राजनीतिज्ञ थे जबकि रूद्रनाथ लंदन विश्वविद्यालय में गणित के प्राध यापक थे। अपने की पिता की मृत्यु के बाद शंभोनाथ ने इस गांव के साथ नाता जोड़े रखा। 1965 के आसपास वह इस गांव में आये थे तथा गांव की पेयजल की सुविधा के लिए 30 हजार रूपये दिये। इस धनराशि से टयूबेल के लिए बोरिंग की गयी। लेकिन टूयबबेल नहीं लगा।

करीब 40 साल बाद आज गांव के एक पशुबाड़े में बोरिग पाइप मिट्टी और गोबर से जाम पड़ा है। गांव पेयजल से आज भी वंचित है। नयपाल ने 1962 में जब गांव का भ्रमण किया था तब आम के झुरमुट के बीच का गांव का तालाब बहुत सुन्दर दिखाई देता था। अन्य गांव की तुलना में गांव समृद्ध भी था। लेकिन

☎ (05561) 223156

आलोक एजुकेशनल स्टोर्स, एवं दूरसंचार केन्द्र

निकट सेन्ट्रल बैंक, हास्पिटल रोड, भलुअनी, देवरिया, उ0प्र0

प्राथमिक, जूनियर हाईस्कूल एवं इण्टमीडिएट के परीक्षा पेपर, कापी इत्यादि के लिए सम्पर्क करें।

नोट : दैनिक हिन्दूस्तान, आज पेपर के लिए सम्पर्क करें। **प्रो0सुरेश कुमार पाण्डेय** पत्रकार हिन्दुस्तान

हालात आज इकसे उलट है। पूर्वजों द्वारा बनवाये गये तालाब में दुर्दशा से गांव वाले दुखी है लेकिन कोई भी इस बात के लिए तैयार नहीं है मिलजुल कर इसका जीर्णोद्धार किया जाय। ब्राहमणों का गांव होने के कारण प्रशासन इस गांव के विकास पर कोई ध्यान नहीं देता। विकास योजनाएं लगता है कि अन्य गांवों के लिए है।

रामचन्द्र दुबे के अनुसार करीब 30 साल पहले नयपाल की मां द्रोपदी कपिलदेव इन गांव में आयी थी। सर विद्याधर के उपेक्षित व्यवहार के विपरीत द्रोपदी कपिलदेव ने अपने संम्बधियों से आत्मीयतापूर्ण व्यवहार किया था। परिवार के लोगों के बीच बैठकर उन्होंने भात और कोहड़ा की सब्जी खायी थी। उनकी टिप्पणी थी 'यह मेरे पिता का गांव है। यहां की हर चीज मेरे लिए अमृत की तरह है।'

सरविद्या नयपाल ने 1962 की यात्रा के समय में पाया था कि उनके नाना की जमीन को लेकर मुकदमेंबाजी चल रही है। चालीस साल बाद यह मुकदमा आज भी जारी है तथा इन दिनों इलाहाबाद उच्च्व न्यायालय में है।

भारत के बारे में नयपाल की विचारों में क्रमशः सुधार और प्रौढ़ता आयी है 'ऐन एरिया आन डार्कनेस, इंडिया ए वुडेंड सिविलाइजेशन' और 'ऐ मिलियन म्यूटिनीज नाउ' नयपाल की भारत दृष्टि का अक्स है। अब नयपाल को मानना है कि 'भारत के बारे में क्या सोचता हुँ यह महत्वपूर्ण नही है भारतवासी कैसे जीवन सघर्ष कर रहे है यह सबसे महत्वपूर्ण है।

☎ (05568) 228702

योगेश्वर पैथालॉजी

दुकान न0 8, जलकल काम्पलेक्स, न्यूकॉलोनी, देवरिया

नोट : यहॉ खून, पेशाब, पैखाना, वीर्य, बलगम व गर्भ परीक्षण आदि का जॉच किया जाता है।

डा0 एस0सी0 प्रजापति

बी.एस.सी, बी.ए.एम.एस. एवं डी.एम.एल.टी पैथे0, बाम्बे, रजि0

नायपाल कुलनाम क्यों?

नोबल साहित्य पुरस्कार विजेता सर विद्याधार नयपाल के ननिहाल के गांव वाले इस बात को लेकर उलझन में हैं कि उनका यह अजीब सा कुल नाम कैसे पड़ा। पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिलें के महादेव दुबे गांव के लोग दुबे पांडये तिवारी जैसे ब्राहमण के कुल नामों से परिचित है लेकिन नायपाल नाम कैसे पड़ा इस पर वे चक्कर में पड़ जाते है।

सर नयपाल ने अपने एक उपन्यास में 'दूबे लोगों का गांव' के रूप में इस गांव का जिक्र किया है। यहां विरादरी की हर व्यक्ति को कई पीढ़ियों के गोत्र और कुलनाम जुबानी याद है लेकिन नायपाल परिवार के गोत्र और कुलनाम के बारें मे कुछ नहीं बता पाते।

मेरी जानकारी के अुनसार नायपाल नाम उनके पिता के पक्ष से है। उनके पैतृक गांव के बारे में हमें जानकारी नहीं है।

स्वयं सर नायपाल भी कई दशकों की पीड़ादायी खोज बावजूद अपने परिवार के इतिहास का ठीक–ठाक पता नहीं लगा सके। सर नायपाल अपनी बुआ से पहली बार तब मिले जब वह मृत्युशैया पर थी। उस समय उनकी उम्र 40 वर्ष थी। अपनी अर्द्धआत्म कथात्मक कृति' फाइडिंग दि सेंटर' में उन्होंने लिखा है 'उन्होंने मुझसे बड़ी गंभीरता से बात की। वह चाहती थी कि मैं अपने वंश के बारे में जान लूं। यह जान लूं कि मेरे पिता कहां से आये थे क्योंकि यह जानकारी उनके साथ ही लुप्त हो जाने वाली थी। वह मुझे बताना चाहती थी कि मेरा खून शुद्ध है। '

अपनी बुआ से मिली जानकारी के अधार पर नायपाल अपने परिवारिक इतिहास की 'एक तस्वीर पेश करते है' करीब 1880 में भारत के संयुक्त प्रांत में अयोध्या के प्राचीन शहर में पांडेय विरादरी की एक युवती ने एक पुत्र को जन्म दिया। अवश्य ही वह सामाजिक रूप में लांछित हुयी होगी क्योंकि वह अपने नन्हें पुत्र के साथ अकेले ही एक सुदूर दीप पर जाने के लिए तैयार थी जहां उस क्षेत्र के कई अन्य लोग जा रहे थे।

यह पांडेय स्त्री नायपाल के पिता की दादी थी। अपने पिता सी. प्रसाद के कहानी संग्रह दि एडवेंचर्स आफ गुरुदेव की भूमिका में उन्होंने लिखा है नायपाल मेरे पिता के पिता का नाम था।

इस बात पर भी विवाद है कि सोच समझकर नाम रखने वाले ब्राहमणों के लिए नायपाल एक विचित्र सा नाम था या फिर यह कुलनाम था। पूर्वी उत्तर प्रदेश में जातियों और जनजातियों पर अनुसंधान करने वाले विद्वानों ने जिक्र किया है कि भारत और नायपाल के तराई क्षेत्र में रहने वाले ब्राहमणों के बीच नायपाल कुलनाम प्रचलित था।

ब्रिटिश अध्येता एम.ए. शेरिंग ने अपनी कृति 'हिन्दू ट्राइब्स एण्ड कास्टम' में लिखा है कि नायपाल ब्राहमणों की एक शाखा थे। वे नेपाल की तराई में बसते थे और इसीलिये उन्हें नायपाल कहा जाता था। अंग्रेजी में उनके नाम से स्पेंलिग बिल्कुल अलग ढंग से लिखे जाने का भी एक इतिहास है। कैरिबियन देशों में गन्ने की खेती के लिए पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार ले जाये गये मजदूर केवल भोजपुरी बोलना जानते थे। इसलिए संस्कृतनिष्ठ नाम भी कई बार बिल्कुल बदले हुए रूप में नजर आते थे। उन्हें दर्ज करने वाले कर्मचारियों ने अंग्रेजी में उन्हें जिस ढंग से लिखा उससे वे और भी विचित्र हो गये।

इन मजदूरों के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द 'गिरमिटिया' भी 'एग्रीमेंण्ट ' शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है।

काशी के पंडित सर नायपाल के कुलनाम की एक और भी व्याख्या करते है। उनका कहना है नायपाल दरअसल 'नयपाल' अर्थात सत्य के रक्षक का ही बिगड़ा हुआ रूप है।

जीवन में सदभावना का महत्व

0मनीष कुमार द्विवेदी

किसी अच्छी बात को सुनने मात्रा से उतना लाभ नहीं प्राप्त होता जितना कि उस पर अमल करने से और उसके अनुसार अनुष्ठान करने से।

शास्त्रों में एक जगह चारों युगों का लक्षण करते हुए लिखा गया है कि–

कलिः शयानों भवति सञ्जिजहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठन्त्रोता भवति कृतं सम्पद्यते परम्।।

अर्थात् कलियुग नहीं अपितु उचित कार्य का ज्ञान हो जाने पर भी सोये पड़े रहना उसके लिए उचित प्रयत्न न करना ही कलियुग है। इसी प्रकार उस कार्य को करने के लिए तैयार हो जाना त्रोता तथा उसमें संलग्न होकर उस कार्य को संपादित करने लग जाना ही सत्युग है।

इसके लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है–सद्भावना। भावना अच्छी होने पर प्राणी के कल्याण में कोई बाधा नहीं होती। महापुरूष तो वही है जो अपनी उन्नति के साथ–साथ सभी लोगों की उन्नति की कामना करें। इसलिए भावना उत्तम बनानी चाहिए क्योंकि दूषित भावना के द्वारा प्राणी का कल्याण ओर विकास दोनों अवरूद्ध हो जाता है। जिस प्रकार दीवार पर फेंकी गई गेंद अपने ऊपर आ गिरती है। उसी प्रकार दूसरे के लिए चाही हुई हानि अपने ऊपर आ पड़ती है। परन्तु आज के मानव की भावना अत्यन्त दूषित हो चुकी है। जहॉ प्राणी को दूसरे के दुःख को दूर करने लिए स्वयं दुःखी होना चाहिए, वहॉ वह इसके विपरीत दूसरे को अधिक दुःख हो इसके लिए वह स्वयं थोड़ा दुःख उठाने को भी प्रस्तुत हो जाता है।

सद्भावना के साथ ही साथ व्यक्ति को अपने ज्ञान और कर्म को भी शुद्ध रखना चाहिए। सिद्धात तो यह है कि ज्ञान एवं कर्म भी भावना का ही अनुसरण करते है। अतः प्रधानता भावना की ही है। साधनावस्था में चित्त की शुद्धता अत्यन्त आवश्यक होती है। और चित्त शुद्धि ही भावना के पवित्रा होने का मूल है। चित्त की शुद्धता के लिए निम्न स्थितियों का होना अनिवार्य है। सुखी प्राणी में मैत्री सौहार्द, दुःखी में करूणा, कृपा, पुण्यशील में मुदिता हर्ष और अपुण्य, पापी में उपेक्षा उदासीनता करने से चित्त की शुद्धि होती है।

अर्थात् सुख संयुक्त प्राणियों को देखकर ऐसी भावना करें कि ये मेरे मित्रा है और उनसे सौहार्द की भावना रखने से ईर्ष्या–द्वेष की भावना समाप्त हो जाएगी और मन प्रसन्न हो जाएगा। दुःखी प्राणियों को देखकर उनका दुःख किस प्रकार दूर होगा ऐसी भावना लानी चाहिए। दुखितो के प्रति करूणा–कृपा की भावना लाएं न कि उपेक्षा अथवा हर्ष मनायें। उनके दुःख को दूर करने के लिए सतत् संघर्षरत् रहे। पुण्यशील को देखकर उनके पुण्य का अनुमोदन करते हुए प्रसन्न होना चाहिए, विद्वेष तथा उपेक्षा की भावना नहीं अपनानी चाहिए। इसी प्रकार पापियों के समक्ष आने पर उदासीनता की भावना अपनानी चाहिए। न कि उनके पापों का विश्लेषण करके राग–द्वेष से दूर रहने पर मन प्रसन्न होता है और भावना अत्यन्त पवित्रा होती है। कर्म कें कदाचित ठीक न होने पर भी यदि भावना पवित्रा हो तो प्राणी का कल्याण हो सकता है।

कहते हैं कि एक सड़क के दोनों ओर आमने–सामने एक वेश्या तथा संयासी रहते थे। दोनों युवा थे। अपने पेशे में लगी वेश्या भजन करने वाले उस संयासी बाबा को देखकर अपने को धिक्कारती और मन में सोचती कि मैं बड़ी पापिन हूँ ऐसे दुष्कर्म में प्रवृत्त हूँ। संयासी बाबा का जीवन बड़ा उत्तम है। इन्होंने सर्वस्व त्यागकर अपना मन भगवान भजन में लगा दिया है। उधर संयासी बाबा वेश्या को देखकर ठीक इसके विपरीत सोचते कि मैं कितना अभागा हूँ जो इसी अवस्था में बाबा बन बैठा। संसार के सुख का अनुभव नहीं किया। यह वेश्या ही धन्य है जो अपनी युवावस्था का आनन्द ले रही है। यही सोचते–सोचते दोनों की जीवन लीला समाप्त हुई। भावना के अनुसार ही वेश्या को स्वर्ग पुण्यादि लोकों की प्राप्त हुई और संयासी बाबा को दूषित भावना के कारण नरक में जाना पड़ा। अतः भावना उत्तम होना अत्यन्त आवश्यक है। सद्भावना से दिव्य प्रेम की प्राप्ति होती है। उत्तम भावना, श्रद्धा एवं विश्वास जहॉ प्रेम में सहायत होते है वही दूसरी ओर यह प्रेम को अपने मंजिल तक पहुँचाने में भी मदद करते है।

जो व्यक्ति दान करने में समर्थ नही है वह भी दान करने की भावना कर सकता है, इससे वह भले ही दान न कर सके लेकिन लेने की बुरी भावना से तो बच जाएगा। यदि मन में कोई पाप हो जाय तो भी कर्म से उसका आचरण नही करना चाहिए जिससे वह वहीं दबकर नष्ट हो जाए।

जीवन की सफलता के लिए अपने में सद्भावना का संचार करना होगा। सद्भाव लाने के लिए आध्यत्मिक पाठशाला में नाम लिखवाना होगा। वह नाम आज लिखायें चाहे दस पॉच जन्म के बाद बिना लिखाये जीवन की सफलता की कुंजी प्रापत नहीं हो सकती है। सद्भावना का जीवन में बहुत महत्व है। उत्तम भावना के द्वारा जीवन में सुख, समृद्धि तथा यश को प्राप्त किया जा सकता है और इसी के द्वारा जीवन के भव बन्धन से मुक्ति भी संभव हैं।

धारावाहिक उपन्यास

दिल का पैगाम

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

एम.ए., एम0सी0ए0

प्रकाशित रचनाएं– विभिन्न पत्र एवं पत्रिकाओं में लेख, कविताएं प्रकाशित। आकाशवाड़ी के युवा मंच से जुड़ाव, रिर्पोटर जनमोर्चा हिन्दी दैनिक **सचिवः** जी.पी.एफ.सोसायटी,

प्रांतीय महासचिव : राष्ट्रीय जनचेतना, उ0प्र0

प्रकाशनाधीनः लघुउपन्यास 'रोड इन्सपेक्टर एवं उपन्यास 'दिल का पैगाम', कविताएं 'यमुनापार के कवि'

सम्पर्क सूत्रः एल.आई.जी. 93, नीम सराय, कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **बातचीतः**2552444

अब तक आपने पढ़ा– दसवी किस्त

0 अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है। अनिल की दोस्ती साथ पढ़ने वाली, लड़की अनु से होती है, तीनों कम्प्यूटर कोर्स करते है। अनिल और अनु की दोस्ती प्रेम का रुप ले लेती है, परन्तु एक–दूसरे का पता मालुम न होने के कारण दूरियां बन जाती है।

0 अनिल, सावन, अनु, मोना, बबली और शालू पार्क में मिलते है। वहॉ शालू अनू से बताती है कि वह सावन से प्यार करती है। सावन अपने और मोना के बारे में अनू को बताता है।

0 सावन मोना से अपने दोस्त विशाल के द्वारा एक लड़की के पीछे पड़ जाने पर हो रही बदनामी के चलते आत्महस्या किये जाने के बारे में बताता है। **और अब आगे....**

कुछ दिनों बाद कम्प्यूटर इन्स्टीट्यूट से मि0 मनोज पाण्डेय अनु के पापा से मिलते है– "क्यों पाण्डेय जी, आपने किसी लड़के को भेजा था क्या?"

(सोचते हुए) "नहीं तो! मैं किसी लड़के को क्यों भेजूं।"

"शायद किसी फैक्ट्री में अनु की सर्विस के लिए।"

"अरे हॉ। मैं तो भूल ही गया था। सावन नाम का एक लड़का आया होगा। दरअसल जी.के.ग्रुप वालों की एक फैक्ट्री लग रही है। उसी के मैनेजर ने हमसे तीन–चार लड़कियों और आठ दस लड़कों को मॉगा था। मेरे पास समय नहीं था, इसलिए मैनें सावन को भेज दिया था। वह बहुत ही अच्छा व होशियार लड़का है। वह आज के लड़कों से काफी हटकर है। कोई बात तो नहीं है।"

"अरे नहीं! मैं तो ऐसे ही पूछ रहा था। दरअसल आजकल के माहौल को तो आप जानते ही है। जवान लड़की का बाप हूँ ना। ऐसी ही कुछ घटना हमारे और अनु की मम्मी के साथ भी घटी थी।"

वे अपने अतीत में गोते लगाते हुए बताते हैं–

मैं और अनु की मम्मी एक ही कॉलेज में पढ़ते थे। वैसे तो बहुत सी लड़कियॉ मुझ पर मरती थीं और मेरे आगे पीछे चक्कर लगाया करती थी। मगर मुझे उनमें से किसी का प्यार सच्चा नहीं लगा। सबके प्यार के नाटक से स्वार्थ की बू आती थी। किसी ने मेरे धन से प्यार किया था तो कोई मेरे सम्मान को भुनाने के लिए प्यार का नाटक करती थीं।

आप तो जानते ही हैं कि युवावस्था एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें सबको किसी न किसी से प्यार करने की ललक होती है, विपरीत सेक्स के प्रति आकर्षण होता है। और फिर जब दोस्तों की प्रेमिकाओं से मिलता, उनकी कहॉनियॉ सुनता तो मेरे मन में भी ललक जगती कि मैं भी गर्लफ्रेंड बनाऊँ। अपनी पसंद की तलाश में ही था कि एक दिन एक नयी लड़की इंजीनियरिंग द्वितीय वर्ष में दाखिल ली थी। मैंने उसे पहली बार देखा तो बस देखता ही रह गया। और यही हाल कमोवेश उस लड़की का भी था। क्लास समाप्त होने के बाद भी हम लोग एक दूसरे से कुछ न कह सके। मैं उस रात को सो न सका और पूरी रात उस लड़की के ख्यालों में डूबा रहा। बस उसका प्यारा, कमसिन, चेहरा ही याद आता। किसी तरह रात कटी और ऐसा लग रहा था कि कब कॉलेज टाइम हो और मैं पहुँचू।

मैं दूसरे दिन कॉलेज कुछ जल्दी से ही पहुँच गया। मैं सोच रहा था कि कैसे उससे बातें करूँ। उधर उसका भी यही हाल था, जो मेरा था। कहते हैं कि सच्चे प्रेमियों को भगवान भी जानता है, कोई न कोई रास्ता दिखा ही देता है। कक्षा में सर ने मुझे खड़ाकर कहा–मि0 एस0एन0सिंह आप मिस नीलू को अपनी सहायता प्रदान करें और नोट्स तैयार करने में उनकी मदद करें। ये काफी पिछड़ गयी हैं। (नीलू की ओर मुखातिब होकर) मिस नीलू आप क्लास के बाहर मिल लीजिएगा। ये आपकी हर सम्भव सहायता करेंगें।

हम दोनों मन ही मन बहुत खुश हुए। मैं तो यही सोच रहा था कि कब क्लास समाप्त हो और नीलू मुझसे मिले। आज का यह पैंतालिस मिनट का पीरियड है ऐसा लग रहा था मानों पैतालिस दिन का पीरियड हो। अन्ततः इन्तजार की घड़ी समाप्त हुई। वह मुझसे मिली। हम दोनों में पढ़ाई ने सम्बन्धित बातें कम की एक दूसरे को देखे ज्यादा। देखते ही देखते पता कब मैंने आई लव यू कहते हुए उसके होठों को चूम लिया, मुझे पता नहीं चला। फिर हम लोगों का प्यार धीरे–धीरे परवान चढ़ा। मेरी गर्ल फ्रेंड की तलाश समाप्त हुई। मैं भी छुट्टी के दिनों में टीचर के बहाने जाकर मिला करता, सर ने मेरे लिए कितनी बार झूठ बोला होगा। पिताजी से शादी की बात की। मगर

पिताजी लम्बा दहेज लेना चाह रहे थे। एक से एक अच्छे रिश्ते को सिर्फ दहेज के कारण ठुकरा चुके थे। चूँकि नीलू हमारी ही जाति की थी इसलिए सिर्फ दहेज का ही लफड़ा था। मेरे पिताजी मुझसे बहुत प्यार करते थे। मैंनें खाना पीना छोड़ दिया और अन्ततः पिताजी को झुकना पड़ा। हमारी शादी पूरे रश्मोंरिवाज से सम्पन्न हुई और हमारे दिल का पैगाम पूरा हुआ।

उसी समय श्रीमती एस.एन.सिंह चाय लेकर आती है–"अरे भई पाण्डेय जी, इस बुढ़ापे में किसके दिल का पैगाम पूरा किया जा रहा है। क्या बुढ़ापे में भी दिल का रोग लग गया"

"अरे भाभी जी, आपसे घायल भइया, आपको पाने की दास्तान बयॉ कर रहे थे।"

श्रीमती एस.एन.सिंह मुस्कराने लगती हैं।

"देखो भई, पाण्डेय जी, आज जब इस उम्र में हमारी लड़की इश्क लड़ाने के काबिल हो गयी है तो ये हमें ऑख मार रहीं है।"

श्रीमती सिंह सरमाकर अन्दर चली जाती हैं। उधर मि0 मनोज पाण्डेय मि0 सिंह की कहानी के टीचर की भूमिका में खुद को पाते हैं और सोचते हैं कि यहॉ भी यही कहानी दुहराई जायेगी।

XXXXXXXX

दूसरे दिन सावन मि0 मनोज पाण्डेय से मिलने जाता है और सारी कहानी बताता है।

"देखों, सावन बेटे। मुझे तुम पर नाज है, तुम जो भी करोगे वह सोच समझकर ही करोगे। ऐसा कोई भी काम न करना जिससे हमारी बदनामी हो। और बाकी जो करना होगा उसके लिए मैं तैयार हूँ।"

मनोज पाण्डेय सावन को मि0 एस0एन0सिंह द्वारा कही गयी बातों को बताता है।

"सॉरी सर! मुझे आपसे मिलने में देर हो गयी।"

"नहीं बेटे, ऐसी कोई बात नहीं है। खैर आगे क्या करोगे, क्या योजना है तुम्हारी"

सावन मि0पाण्डेय को अपनी सारी योजना बताता है।

"वाह सावन, वाह। इतनी बारीक सोच शायद हम लोग भी नहीं सोच सकते। वेरी गुड। तुमने तो तेइस में छियालीस की योजना व बुद्धि का अनुभव प्राप्त कर लिया है।"

"सर, मेरी योजना में कोई बदलाव चाहिए तो बताइए"

"नहीं, सावन। नो, एनी चेंज। यू फॉलों योर प्लान, आई हेल्पड टू यू फिजिकली, इक्नामिकली बट इनडायरेक्टली"

"थैंक यू सर।"

XXXXXXXX

सावन के जीवन में मोना के आ जाने से उसकी पढ़ाई में चार चॉद लग जाता है। वह अपनी पढ़ाई के प्रति काफी सचेत हो जाता है। वह सारे फालतू काम बंद कर सिर्फ पढ़ाई पर ध्यान देता है। कहते हैं कि प्रत्येक इंसान को एक साथी की जरूरत अपने दिल की बात, दुःखों और खुशियों को बॉटने के लिए पड़ती है, खासकर युवा वर्ग को। चाहे वो जिस भी रूप में हो। सावन ने बहुत ही देर से अपने साथी को चुना लेकिन अद्वितीय चुना। मोना सावन के लिए प्रेरणा स्रोत थी, प्रणेता थी। कुछ दिनों बाद सावन और मोना पुनः मिलते है।

"मोना, तुम शादी के बाद क्या करोगी?"

"पहले शादी होगी, फिर हम लोग एक महीने पूरे घूमेंगे। फिर मिलकर जीवन का

खामोश मत रहना तुम

✍ jtuh'k dqekj frokjh ^jkt^

उम्मीद जगी है तुमसे,
कुछ मीठी–मीठी बातों से
हर जगह पे तेरी खुशबू थी
हर आहट भरी थी उम्मीदों से
पलकों मे बिठा लूं तुमको
उस पल मैंने कब सोचा था
क्यों ख्वाब सजाने लगता है
पल दो पल कि मुलाकातों से
दुआ करोगी तुम क्या मेरी खातिर
बन कर हकीकत बस जाओं सांसो में
ना बहकाओं इन सपनों वाली बातों से
दुआ करो तुम मिलने वालों से
प्रतिदिन इन छोटी–छोटी राहो पें
मैं यादों को चुनंगा हर छोटी–2 मुलाकातों से
पढ़े गजल मेरी खामोश ना रहना तुम
इन बड़ी–बड़ी मस्त वहारों से।

25 ch] efgykxzke dkWyksuh]
lqcsnkjxat] bykgkckn]
nwjHkk"k% 2436659

सारा कार्य करेंगे। और मैं आपकों एक साल के अन्दर बिल्कुल आपके जैसा ही एक नन्हा सा, प्यारा सा सावन दूँगी। और फिर एक और प्यारा सा उपहार तीन साल बाद दूँगी।"

"देखो मोना, पहले मुझे एक प्यारी सी, नन्हीं सी, गुड़िया सी, बिल्कुल तुम्हारे जैसी मोना चाहिए।"

पहले सावन, पहले मोना पर दोनों बहुत देर तक बहस करते रहते है। मगर बबली हस्तक्षेप कर उन दोनों की बेसुरी बहस का समापन करवा देती है।

"अरे भईया, शादी तो आप लोगों की हुई नहीं और पहले ही लड़का–लड़की का लफड़ा प्रारम्भ कर दिया। पहले शादी करो, हनिमून मनाओ फिर सोचना। वैसे सावन का पहले होना जरूरी है।"

"ऐ–ऐ बबली"

"क्या हुआ? क्या मैं गलत कह रही हूँ। (मुस्करा कर)"

"अच्छा बाबा लो मैं हारी। (शर्माते हुए)पहले मोना"

"अब हुई न बात। यू आर रियली ए वेरी–वेरी गुड वाइफ।(धीरे से) यू फॉलों एग्रीमेंट प्रिसींपल।"

सावन मोना से अगले माह प्रारम्भ होने जा रही अपनी परीक्षा के बारे में बताता है।

"बस, आज से परीक्षा समाप्त होने तक मुलाकातों का सिलसिला बिल्कुल बंद। आज से केवल पढ़ाई। पहले पढ़ाई फिर प्यार होगा, प्यार होगा,..........."

"मुझसे सा ना इंतजार होगा। दिल दीवाना, बिन तुमसे मिले मोना, मानेना, तू पगली है, कुछ समझेना।"

"सावन, तुम तो बस मजाक...........। क्या मैं तुम्हें देखे बिना, मिले बिना रह सकती हूँ। तुम्हारे बिना एक–एक पल कैसे गुजारती हूँ तुम क्या जानो। तुम्हारी यादों के सहारे ही तो जीती हूँ। तुमने ही तो कहा था हमारी पढ़ाई में प्यार बाधक नहीं होना चाहिए। कुछ तुम अपने को रोको, कुछ मैं। फिर एक ही महीने की तो बात है, सोच लेना मैं बाहर गयी हूँ और मैं भी........। और फिर कहीं इंसान बिन सॉसों के जी सकता है। फूल से खुशबू कहीं जुदा हो सकती है? फूल से खुशबू निकला जाने पर फूल का कोई अस्तित्व नहीं होता। तुम जहॉ–2 रहोगे, वहॉ–वहॉ मै। तुम्हारी खूशबू बनकर महकती रहूँगी? तुम्हीं तो कहते हो, प्यार को एक मिसाल बनाना है। सावन, आज तक आपने हमेशा पढ़ाई में टॉप किया है, अगर अबकी आपने टॉप नहीं किया तो मैं अपने को कभी भी माफ नहीं कर पाउगी। सभी यह कहेंगे कि मेरे ही कारण ऐसा हुआ। सावन आपको मेरे लिए पहले से अधिक मार्क्स लाने होंगे। इसके लिए मुझे हर बलिदान मंजूर है। वरना मैं आपसे कभी नहीं बोलूगी।"

"मोना, तुम मुझे इतना बड़ा दंण्ड मत दो"

"सावन, आप ही मेरी जिन्दगी हो। आपके अच्छे मार्क्स पाने से ही हमारे प्यार की जीत होगी। आप आज तक प्रत्येक क्षेत्रा में चमकते आए हो और आगे भी चमकते रहना, तभी मैं समझूंगी कि मेरा प्यार सच्चा है, वरना ...."

xxxxxxxxxx

सावन बहुत ही कठोर परिश्रम करता है। उसे मोना के न बोलने का भय सताता रहता है। वह पूरी दुनिया को भूलकर दिन–रात एक कर देता है। उधर मोना भी प्रतिदिन अनिल से पूछती रहती, उसे चैन कहॉ था? वह तो बस सावन के लिए थोड़ा कड़ा रूख अपनायी थी। कुछ–कुछ शालू ने उसे बताया कि सावन बहुत ही दुबला हो गया है, वह बहुत दुःखी हो गयी थी। वह सोचती है कि वह सावन को कैसे एडजस्ट करें, उसके लिए वह क्या करें कि वह अपने शरीर पर ध्यान देते हुए पढ़े। पर एक कुँआरी लड़की कर भी क्या सकती है। वह सोचती है–मैंने सावन को न बोलने को कहकर, खुद पर जुल्म किया किया है और साथ में सावन पर भी किया है। अगर उेस कुछ हो गया तो वह परीक्षा कैसे देगा और वह खुद को कभी भी माफ नहीं कर पायेगी। वह प्रतिदिन मंदिर जाकर भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती–हे! भगवान, आप तो सावन के भइया है। वह आपको बड़े ही प्यार से भइया कहता है और आप भी तो प्यार के समर्थक हैं। फिर आप अपने छोटे भाई के प्यार की खातिर उसकी मदद करिये। यह आपकी पुजारिन आपके छोटे–भाई की धड़कन के सहारे ही जीवित है। और

अब आगे पढ़िए–

क्या सावन परीक्षा में अच्छे नंबरो से पास हो पाता हैं

क्या अनु और अनिल एक दूसरे से शादी कर पाते हैं?

बधाई हो

दोस्तो बधाई हो। इस कालम के अन्दर आप अपने इष्टमित्रो, रिश्तेदारों, सहयोगियो इत्यादि को जन्मदिन / शादी शादी वर्षगांठ / होली / परीक्षा पास करने पर / नौकरी प्राप्त करने पर / प्रमोशन इत्यादि पर बधाई संदेश भेजना चाहते है तो आपको अपना संदेश, संदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पता व 25.00 रुपये मात्र देना होगा। अगर आप फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 50.00रुपये व फोटो देना होगा। आपका संदेश पत्रिका में छपेगा और पत्रिका परिवार उस अंक को आपके द्वारा दिये गये पते पर डाक से भेजने की व्यवस्था करेगा।

कम्प्यूटर के क्षेत्र में जाने लिए जरूरी है एम.सी.ए.

कम्प्यूटर शिक्षा

कम्प्यूटर के क्षेत्र में काम करने के लिए आजकल लगभग हर कंपनी एमसीए की डिगरी की मांग करती है। इसकी मांग विदेशो में भी ज्यादे है।

अगर आप आईटी क्षेत्र में जाना चाहते हैं तो एम.सी.ए. की डिगरी अतिआवश्यक है। इस क्षेत्र में जाने के लिए लगभग प्रत्येक कंपनी एम.सी.ए. की मांग करती हैं। लगभग हर प्रमुख विश्वविद्यालय इस कोर्स को अपने यहॉं चला रहे है। इसमें प्रत्येक संस्थान में लगभग 30 सीटें निर्धारित है। कुछ अन्य प्रवेश परीक्षाए भी है जैसे मध्य प्रदेश का प्रीएमसीए, यूपीएमसीएटी आदि। इन परीक्षाओं के लिए लगभग 500 से 1000 सींटे निर्धारित की जाती है। इसके लिए परीक्षार्थी को इंटर में गणित विषय होना अनिवार्य हैं। जिन्होंने इंटर में गणित विषय नहीं लिया है उनके लिए एमसीए के लिए सीमित साधन ही है।

दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय और पूणे विश्वविद्यालय अपने अलग–अलग टेस्ट आयोजित करती है। कुछ संस्थानों में एक ही प्रवेश परीक्षा है। जैसे मध्य प्रदेश के अधिकांश कॉलेजों के लिए एमपी–प्री एमसीए टेस्ट, उत्तर प्रदेश के अधिकतर कॉलेजों के लिए यूपीएमसीएटी।

एमसीए परीक्षा का कोई एक निर्धारित पाठ्यक्रम नहीं है। इस परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाते है। लेकिन कुछ परीक्षाओं में आत्मनिष्ठ प्रकार के प्रश्न भी होते है।

कैसे करें तैयारी–

इसमें दो घंटे में 100 प्रश्न हल करने होते है। आमतौर पर एमसीए प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम में उच्च स्तरीय गणित (बीएससी स्तर), दसवी स्तर की गणित, तर्क बुद्धि जैसे विषय होते है। इस परीक्षा में प्रश्नों को तेजी से हल करने की जरूरत होती है। इसलिए परंपरागत ढंग से इसकी तैयारी नहीं चलेगी। केवल जेएनयू में ही सब्जेक्टिव प्रश्न पूछे जाते है।

समय निर्धारण भी आपके लिए एक बड़ी समस्या हो सकती है। पहला कदम यह होना चाहिए कि आप यह निर्धारित कर लें कि परीक्षा के लिए क्या गुण जरूरी है।

जिस परीक्षा की आप तैयारी कर रहे है, उसकी योग्यताएं पता करने के बाद अपनी कमजोरियों व क्षमताओं को पहचाने। हर परीक्षा में कुछ ऐसे विषय होते है जो सबसे अधिक सरल व अच्छे लगते है व कुछ बहुत ही कठिन लगते है। जो विषय आपको अच्छा व सरल लगता है, उसका कोई भी भाग न छोड़े।

अपने समय को विषयों के अनुसार बांटे। अपनी प्राथमिकता तय करें। यह तय कर लें कि आप किस इंस्टीट्यूट में प्रवेश लेना चाहते हैं व उसी के अनुसार तैयारी शुरू करे। ऐसी किसी भी परीक्षा के लिए जल्दी में तैयारी न करें। ध्यान रखें कि प्रतियोगिता का जमाना है।

कुछ विश्वविद्यालय जैसे इंदिरा गॉधी मुक्त विश्वविद्यालय में प्रवेश परीक्षा नहीं होती। वहॉं एमसीए में प्रवेश इग्नू द्वारा संचालित डीसीओ, सीआईसी अथवा बीसीए में प्राप्त अंको के आधार पर ही मिलता है।

प्रमुख संस्थान

0 दिल्ली विश्वविद्यालय

0 जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय

0 पुणे विश्वविद्यालय

0 वीजेटीआई मुंबई

0 हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय

0 गोवा विश्वविद्यालय

0 रूड़की विश्वविद्यालय

0 आरईसी, त्रिची

0 बीएचयू, वाराणसी

दूर रहकर हमने जाना प्यार क्या है.....?

0 लक्ष्मी हजोअरी

हम अक्सर सुनते रहते है कि दूर रहने से प्यार बढ़ता है। दूर रहना बहुत ही कठिनतम होता है, इसकी पीड़ा को भुक्त होगी ही समझ सकता है। अगर गौर करें तो दूर रहने पर ही पता चलता है दो मनों के बीच कितनी नजदीकी है। यह दूरी ही अक्सर बहुत पास होने का मीठा अहसास दिला जाती है। अकेलेपन से उब जाने पर अपने प्रिय से फोन पर बातें करनें अथवा चिट्ठी लिखने व उससे चिट्ठी मिलने पर मन कितना खुश होता है, इसका अंदाज लगाना कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है।

> दूर रहना बहुत ही कठिनतम होता है, इसकी पीड़ा को भुक्त होगी ही समझ सकता है। अगर गौर करें तो दूर रहने पर ही पता चलता है दो मनों के बीच कितनी नजदीकी है। यह दूरी ही अक्सर बहुत पास होने का मीठा अहसास दिला जाती है।

हमेशा साथ–साथ रहने पर कई बार हमें महसूस नहीं होता है कि दूसरे का हमारे जीवन में क्या महत्व है। हम भूल जाते है कि आज वो हमारे साथ हमसाया बना हुआ है, कल कुछ देर के लिए ही सही, कहीं दूर भी जा सकता है। अक्सर ऐसा होता है कि हम चीजों को स्थायी मान बैठते है। जो है, सो वैसा ही चलता रहेगा, जब तक हम चाहेंगे। पर ऐसा होता बहुत कम ही है।

तब बेचैनी और अकुलाहट का आलम तो पूछिए ही मत, जब एकदम से पता लगे कि आपका हमसाया कहीं दूर जा रहा है। उसे जाना ही है और आप उसे रोकने की स्थिति में नहीं है। कैरियर, नैाकरी में अच्छी संभावना या किन्हीं दूसरी वजह से कई बार साथ रहना संभव नहीं हो पाता है। हालांकि यह जुदाई थोड़े दिनों की ही होती है, पर इसकी पीड़ा हमेशा के लिए बिछड़ जाने के दर्द से कुछ कम नहीं होती।

दूर–दूर हरने का संबधों पर प्रभाव पड़ता है, इससे तो इनकार ही नहीं किया जा सकता। लेकिन एक सच्चाई यह भी है कि दूर रहकर एक–दूसरे को बेहतर तरीके से समझने में मदद मिलती है। कुछ दिनों बाद जब ऐसे लोग एक–दूजे के सामने होते है, तो उनके दिलों की हालत वे ही जानते है। हमेशा साथ रहने वाले, कुछ समय तक बिछुड़े रहने के बाद जब मिलते है तो निश्चित तौर पर उनके संबंध और मजबूत होकर उभर आते है।

जब वह काफी दूर होते है तो आपके पास भी काफी वक्त होता है। इसका सदुपयोग करते हुए अपने काम पर ज्यादा ध यान दिया जा सकता है। इससे कैरियर को गति मिलेगी। इसके अलावा उन दोस्तों को याद किया जा सकता है, साथ चंद लम्हें गुजारे जा सकते है, जिनके साथ रहना–हंसना आपको बहुत भाता है। यह तो सभी मानेंगे कि बेफ्रिकी और चितारहित होने की स्थिति में आदमी को अपना आत्मनिरीक्षण करने में सहूलियत होती है। वह अपने बारें में, जिंदगी के बारे में बेबाकी से सोच पाता है।

दूर रहकर भी अगर आपका मन उसके

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

स्नेहागन कला केन्द्र

एल.आई.जी. 93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

0flykbZ 0dk<kbZ 0iasfVx 0dEI;wVj 0C;wfVf'k;u

0baXyh'kLikdsu 0 अन्य प्राफेसनल कोर्सेस एवं व्यवसायिक कोर्सेस

uksV%&gekjs ;gk¡ vuqHkoh v/;kidks }kjk Vsªfuax dh O;oLFkk gSA

संग लिए तड़पता है, तो जानिए कि आपको उसकी जरूरत है। वो भी आपको याद करते हैं, तो समझ लीजिए कि आपको मनचाहा जीवनसाथी मिल गया है। दूर रहकर भी आपसी रिश्ते की अहमियत और परस्पर जरूरत को साबित करती हैं। एक दूसरे की कम से कम चिंता किए बगैर रहने की आदत पड़ती है।

अगर दूर रहने से रिश्ता कमजोर पड़ने लगे, तो इसका सीधा सा मतलब तो यही है कि रिश्ता मजबूत कभी था ही नहीं। अगर एक ही शहर या पड़ोस में रहने और घंटो साथ रहने से ही संबंध बने रहते है और एक–दूसरे की जरूरत महसूस होती है, और दूर होते ही सारा प्यार–अरमान उड़नछू हो जाते है तो फिर निश्चित रूप से यह स्वस्थ रिश्ता नहीं है। कहीं न कहीं, कुछ घालमेल है। या तो दोनों पक्ष अपनी जरूरतों के प्रति स्पष्ट नहीं है या फिर एक–दूसरे को ओढ़े हुए है बस यूं ही।

मानवीय संबंध बहुत ही सहज और समझदारी भरे हों, तभी लंबे समय तक टिक पाते है। या फिर दोनों पक्ष किसी न किसी धुरी पर एक–दूसरे के बिना न रह पाने की स्थिति में हो। प्रेम संबंध तो बहुत ही नाजुक होते है। लेकिन संबंधों की सार्थकता तभी है जब कठिन से कठिन दौर में भी संबंध बने रहे। ऐसे संबंधो की नींव परस्पर विश्वास और समझ पर टिकी होती है। धीरज तो खैर बहुत जरूरी है।

ऐसे ही हालात से गुजर चुकी शालिनी का कहना है कि दूरियां भले ही जितनी हों, जरूरी है यथोचित संवाद। इससे भले ही जुदाई की अवधि बड़ी हो, दूर रह रहे व्यक्ति के बारें में लगातार जानकारियां मिलती रहती है। चूंकि व्यक्तित्व का विकास अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है, इसलिए जरूरी है कि दूर रह रहे व्यक्ति के व्यक्तित्व–विकास से आप अवगत होती रहें। कहीं ऐसा न हो कि साल–दो साल बाद आप उससे मिलें तो वह एकदम बदला हुआ नजर आए। और आपके जेहन में बनी उसकी तस्वीर, उससे जुदा हो। ऐसी स्थिति में बात बिगड़ सकती है। शालिनी की राय है कि न्यूनतम संवाद की स्थिति बनाए रखनी चाहिए। इससे संबंध पर पड़ रहे चौतरफा दबावों से मुक्ति पाई जा सकती है।

मनोवैज्ञानिकों के अुनसार दो व्यक्ति अगर एक दूसरे को चाहते है, जरूरत महसूस करते है, तो फिर जरूरी है कि दोनों के बीच संवाद की स्थिति बनी रहे। दूर–दूर रहने की स्थिति में तो यह बहुत ही जरूरी है। अन्यथा कई बार देखने में आया है कि संबंधों पर दूसरे कई कारकों का अच्छा–खासा प्रभाव पड़ता है। दूर होने के साथ–साथ अगर संवाद भी न हो सके, तो दूसरे कारक संबंधो पर अपना दबाब डालते है। नतीजन संबंध कमजोर पड़ते जाते है और अन्ततः टूट जाते है।

फिलहाल तो दूर हैं तो भी आप निश्चित रहिए। बातचीत का सिलसिला चिट्ठी या फोन से बनाए रखिए। खुद पर अपने प्यार पर भरोसा रखिए। अगर आपका दिल कहता है कि वह चाहें हों जितने दूर रहते आपके पास ही है तो यकीन कीजिए।

फिलहाल वो दूर है तो भी आप निश्चिंत रहिए। बातचीत का सिलसिला चिट्ठी या फोन से बनाए रखिए। खुद पर, अपने प्यार पर भरोसा रखिए। अगर आपका दिल कहता है कि वह चाहें हो जितने दूर रहते आपके पास ही है तो यकीन कीजिए। आपसी समझदारी के बूते सबकुछ संभव है। आखिर उन्हें भी तो कभी 'तुमसे दूर रहकर हमने जाना प्यार .....' जैसा कुछ गुनगुनाने का मौका दीजिए।

M-Tech

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

बच्चों के लिए समर कोर्स प्रारम्भ है।

इग्नू द्वारा संचालित : एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,

डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः ओ लेवल, ए लेवल

एम.सी.आर.पी. विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा संचालित : पीजीडीसीए, डीसीए एवं **अन्य कोर्सेस :** टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट

कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क,विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस

सम्पर्क करेः

0 एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर,

कौशाम्बी रोड, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

शाखाः एल.आई.जी 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

नई पहचान

✍नूतन "लता"

आज तेज रफ्तार जिन्दगी में
नित नये बनते बिगडते रिश्तों
प्रतिमानों प्रतीकों के बीच
अपनी नई पहचान
कैसे होगी? क्या बनेगी?
हूँ सर्वथा अनजान।
सामने एक खुला मंच
विशालता आकाश जैसी
वो नया चरित्र क्या होगा?
अपना समझ जिसे जियूँगी
क्या सफलता मिलेगी
सम्मान में तालियॉ बजेंगीं
आत्म विश्वास के अंकुर
उगाने होंगे अपने भीतर
तब मिलेगा मजबूत सम्बल
और होगी राह आसान
बनाने के लिए अपनी
एक सर्वथा नई पहचान।

आवश्यक सूचना

दोस्तों इस बार से हम यह पेज केवल नवोदित कवियों के लिए प्रारम्भ कर रहे है। इस पेज में नवोदित कवियों की रचनाएं ही प्रकाशित की जाएगी। इसमें कविता, गीत गज़ल में से कोई भ एक हो सकता है।

हिन्दू धर्म विराट

पं0 आनन्दी प्रसाद तिवारी "विमल"

धर्म अगर है विस्तृत धरती, मजहब पंथ इसी के पथ है।
इन्हें लक्ष्य तक पहुॅचाने को, समुदायों के निज–2 रथ है।।
विविध जातियॉ तो केवल, व्यवसायों का ही सम्बोधन है।
विविध रंग के सुमनों से, ही सजा हुआ भारत उपवन है।।
भिन्न–2 पूजा पद्धति है, किन्तु एक उद्देश्य।।
युगो–2 से गूँज रहा यह, ऋषियो का सन्देश
वसुधैव कुटम्बकम का अपना, एकात्म भाव सिद्धात।
सारे जीवों में आत्म भाव, समझो कहता वेदान्त।।
मजहब पंथ मिलाकर सब ही, बनता धर्म विराट।
सार्व भौम सर्वतोमुखी, हित चिन्तक भू सम्राट।।
सर्व सुखाये और सर्व हिताय का सार्वभौम उपदेश।।
युगो–2 से ....।।
उदगम जनक सभी के है हम, माना जग ने आचार्य।
इसी श्रेष्ठता के कारण ही, कहलाये हम आर्य।।
हिन्दू जाति को सम्प्रदाय को कहने वाले, क्या जाने इसका मर्म।
सकल प्राणियों का हित चिन्तक, मनुज मात्र का धर्म।।
व्यक्ति नहीं इसमें समष्टि का, स्वार्थ रहित उपदेश।
युगो–2 से गूंज रहा........।
हिन्दू नहीं जाति का द्योतक, न मजहब पंथो की श्रेणी।
जैसे सरिताऐं सब मिलकर, बनती एक त्रिवेणी।।
मजहब पंथ किरण सब इसकी, यह है पूर्ण प्रकाश।
इसके पथ दर्शन पर होता, जग का सतत विकास।।
इसके खण्डित होने पर, फिर क्या बचता है शेष।
युगो–युगों से गूंज रहा यह, ऋषियों का सन्देश।।

फोन न0 : 311887

कमल बैट्रीज

प्रेमनगर, कुण्डा, प्रतापगढ़

हमारे यहॉ इनवर्टर, बैट्री, चार्जर, इमरजेंसी लाइट, स्टेपलाइजर आदि कुशल कारीगरों के द्वारा बनाकर गारन्टी के साथ उचित मूल्य पर दिये जाते हैं।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

प्रो0 बबलू विश्वकर्मा

फोन न0 : 229007

e/qjnqX/Ms;jh

सन्त बिनोवा मार्ग, निकट पोस्ट ऑफिस न्यूकॉलोनी, देवरिया

uksV%&gekjsa ;gkWa rktk nw/k] ns'kh ?kh] iuhj
,oa [kks;k vkfn mfpr nke ij miyC/k gSA

माह जून के व्रत, त्योहार एवं साईत

● पं0 शम्भू नाथ मिश्रा

जेष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून, रविवार : एकम्। चन्द्र दर्शन। करवीर व्रत।

4 जून, बुद्धवार : चतुर्थी। वैनायिकी श्री गणेश चतुर्थी व्रतम। दिन में 12.35 तक भद्रा है अतः भद्रा के बाद कोई भी कार्य शुरू करने में सफलता मिलेगी। सभी शुभ कार्यो के लिए उत्तम पर्व है।

5 जून, गुरूवारः पंचमी। प्रातः 6.06 मिनट तक तक कोई भी शुभ कार्य हो सकता है।

8 जून अष्टमी, रविवारः सर्वार्थ सिद्ध योग है। अमृत सिद्धयोग (कोई भी कार्य शुरू करने पर सफलता प्राप्त होगी।)

9 जून, नवमी, सोमवारः नवमी में शुक्ला देवी का पूजन। गंगा दशहरा

10 जून एकादशी, मंगलवारः निर्जला एकादशी व्रत।

11 जून, द्वादसी, बुद्धवारः वैष्णवानाम् एकादशी।

12 जून, त्रायोदसी,गुरूवारः प्रदोष व्रतम्।

14 जून, पूर्णिमा, शनिवारः स्नानदान पूर्णिमा। भद्रा 5.36 तक।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

15 जून एकम्, रविवारः सायं 5.35 बजे तक सभी कार्यो के लिए शुभ।

17 जून तृतीया, मंगलवारः श्री गणेश चतुर्थी व्रतम्। चन्द्रोदय रात्रि 9.54 बजे।

18 जून बुद्धवार, चतुर्थीः पंचक प्रारम्भ दिन में 3.54 से

22 जून अष्टमी, रविवारः श्री शीतलाष्टमी व्रत।

23 जून नवमी, सोमवारः पंचक समाप्ति रात्रि 10.14 बजे। दिन में 12.42 के बाद 1.35 के पहले जातकर्म, नामकरण, शिशु ताम्बूल भक्षण , अन्नप्रासन, चौल मुण्डन, कर्ण बोध, अक्षराम्भ पश्चिम उत्तर दिशा की यात्राा कण मर्दन न। विपणि वस्तु क्रय तथा वाहन खरीदने का मुहूर्त है।

24 जून दसमी, मंगलवारः भद्रा 2.28 बजे तक। रात्रि 12.41 तक सभी कार्यो के लिए शुभ। दिन 2.28 के बाद सूती स्नान, लाल वस्त्रा प्रवाल रत्न धारण आभूषण निर्माण उत्तर को छोड़कर सभी दिशाओं में यात्राा एवं शुभ कार्यो के लिए विशेष मुहर्त।

25 जून एकादशी,बुद्धवारः योगिनी एकादशी व्रत। सर्वाथ सिद्धियोग रात्रि 3.19 से। फसल काटने वस्तु क्रय–विक्रय का मुहूर्त है।

27 जून तेरस, शुक्रवारः भद्रा रात्रि 8.21 से। प्रदोष व्रत। मास शिवरात्रि।

28 जून चतुद्रशी, शनिवारः भद्रा 9.10 तक। सर्वाथ सिद्धियोग अमृत सिद्धियोग दिन 8.17 तक।

29 जून अमावस्या, रविवारः स्नान–दान–श्राद्ध की अमावस्या।

लेखक/लेखिकाओं के लिए

1.काग़ज के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठय अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाएँ भेजें।

2.रचना के साथ पर्यापत टिकट लगा, लेखक का पता लिखा लिफाफा आना चाहिए। इसके अभाव में हम रचना से संबंधित किसी भी बात का उत्तर नहीं देंगे।

3. रचना के प्रथम पृष्ठ पर लेखक का पूरा नाम और अन्त में लेखका का पूरा अंकित होना चाहिए।

4. कोई भी रचना लगभग पन्द्रह सौ शब्दों से अधिक की न भेंजे।हम लेखकों फिलहॅाल कोई पारिश्रमिक नहीं देते हैं।

समय पर मासिक पत्रिका "विश्व स्नेह समाज" अब आपके दरवाजे पर

सदस्यता फार्म

मैं श्री/मि0/श्रीमती .... पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री .... निवासी .... व्यवसाय .... फोन न0 मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज का वार्षिक/द्विवार्षिक/ पंचवर्षिय/आजीवन सदस्य बनना चाहता हुँ। इस हेतु रुपये .... मात्र शब्दों में ...... नकद/डीडी/मनिआर्डर/ से भेज रहा हूॅ/ रही हुॅ। **नोटः** 1. निवासी की जगह पर पत्र व्यवहार का पता ही लिखे। 2. पत्रिका डाक से देर से मिलने पर पत्र के माध्यम से अवश्य सूचित करें। हम आपके लिए दूसरी प्रति भेजने का प्रयास करेंगे।

भारत में: मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) रु050/00, **विदेशों में** (नेपाल व भूटान को छोड़कर) साधारण डाक से रु0 150.00, **आजीवन सदस्य** : रु0 1100.00 भुगतान का माध्यम चेक / मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट। इलाहाबाद से बाहर चेकों के लिए रु0 20.00 अतिरिक्त राशि देय होगी।

कृपया चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें।

विज्ञापन प्रंबधकः मासिक पत्रिका "**विश्व स्नेह समाज**", एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॅालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

जरा हंस दो मेरे भाय

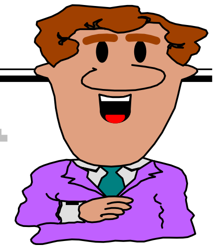

🗣 एक विदेशी ट्रेन से भारत–भ्रमण कर रहा था। हर जगह ट्रेन के लिए उसे घंटो–घंटो इंतजार करना पड़ता। एक ट्रेन में जब टीटी टिकट चेक करने आया, तो वह उस पर उबल पड़ा–'जब ट्रेन लेट ही चलानी है, तो टाईम टेबल क्यों छापते हो?' टीटी ने शांति से उत्तर दिया–'सर इससे पता चलता है कि ट्रेन कितनी लेट है।'

🗣 एक भिखारी मंदिर के पास बैठकर रोज 'भगवान के नाम' पर भीख मांगता था, लेकिन लोग उसे 25–50 पैसे दे कर टरका देते। उसका गुजारा मुश्किल से ही चलता था। एक दिन वह एक ठेके पर जा बैठा। वहां नशे में लोगों ने एक ही दिन में उसे 25–50 रूपयें तक की भीख दे डाली। तब वह बोला–भगवान तेरा खेल भी निराले है। पता कहीं का दिया है, रह कहीं और रहा है।'

🗣 एक हिंदुस्तानी ट्रक ड्राइवर लंदन गया। अंग्रेजी के नाम पर उसे अपने ट

🗣केमिस्टः बहन जी, अभी तो मैं यह दवा दे रहा हूं, लेकिन अगर आप ठीक न हों, तो दुबारा यह परचर लेकर आना। मैं डॉक्टर की राइटिंग पढ़ने की एक बार फिर कोशिश करूँगा।

🗣 नौकरः साहब, मोची कर रहा है कि उसे अभी तक जूते की मरम्मत के पैसे नहीं मिले।

मालिकः अरे, तो कौन–सी आफत आ गई। उसे कह दो कि उस की बारी आने पर पैसे मिल जाएंगे। अभी तो हमने दुकानदार को ही जूतों के पैसे नहीं दिये है।

🗣 राजूः पापा, कल रात को मैं दो बजे तक पढ़ता रहा।

पापाः झूठ बोलते हो! बत्ती तो रात को ग्यारह बचे ही चली गई थी।

चैाक का दाम अब सिविल लाईंस मे

खुल गया कपड़े का भव्य शोरूम

स्टूडेन्ट्स टेलर्स, शगुन चौक की नई भेंट

लगन

कलेक्शन

THE REVISIT SHOP

Raymond

मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे

सिविल लाईन्स, इलाहाबाद फोन : 2608082

राजूः चली गई होगी। मैं तो पढ़ने में इतना मग्न था कि मुझे पता ही नहीं चला।

🗣 दुकानदारः क्या रामराज्य में लोग सच बोला करते थे?

दूसरा दुकानदारः हां, उस समय इनकमटैक्स जो नहीं लगता था।

🗣 डॉक्टरः आप की बीमारी की जड़ आप का अधिक परिश्रम करना है। वैसे आप काम क्या करते हैं?

रोगीः जी, मैं डाका डालता हूँ।

डाक्टरः तो फिर आप ऐसा करिए कि कुछ दिनों के लिए जब काटने का धंधा शुरू कर दीजिए।

🗣जजः उम्मीद है जिन भूलों के कारण तुम्हें यह सजा मिली थी, भविष्य में उन्हें नहीं दोहरापाओगे।

चोरः आप विश्वास रखिए जज साहब, अगली बार मैं दस्तानों का उपयोग अवश्य करूंगा।

🗣एक कैदी : तुम्हें किस जुर्म में सजा दी गई है?

दूसरा कैदीः सरकार को मेरा एक काम पंसद नही था।

पहल कैदीः क्या काम था वह?

दूसरा कैदीः नोट छापना

🗣मैनेजरः इस नोटिस को ऐसी जगह पर लगा दो, जहां से सब लोग इसे देख सकें।

क्लर्क : सर, इसे दीवार घड़ी पर लगा दूं।

🗣ग्राहक : ये जूते चलेंगे तो खूब न?

दुकानदारः भगवान न करे, आप के यहां जूते चलने की नौबत आए।

🗣ग्राहकः यह कॉफी है कि क्या है? इसमें तो तारपीन के तेल जैसा स्वाद आ रहा है।

वेटरः फिर, तो यह चाय है। हमारी कॉफी में तो मिट्टी के तेल जैसा स्वाद आता है।

lqfDr;kW%

dqNHkhgksekSf'kcrdsfnuxqtjtkrsgS

vxjuqgahxqtjrsrksdVtkrsgSA

डिप्रेशन (अवसाद)

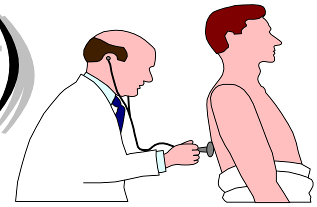

डा. कुसुमलता मिश्रा
एक्यूप्रेशर चिकित्सिका,

डिप्रेशन एक ऐसी बीमारी है, जिसे व्यक्ति समझ नहीं पाता और धीरे–धीरे घर परिवार समाज और एक समय ऐसा आता है जब वह स्वयं से ही कटने लगता है, और ऐसी स्थिति अत्यंत भयावह बन जाती है। रोग ग्रसित व्यक्ति शरीरिक कष्ट नहीं झेलता बल्कि वह मनो–रोगी होता है। जिसे परिवार वाले समझ नहीं पाते, अतः रोगी व्यक्ति उपेक्षित रहता है। और जब तक रोग पता चलता है पानी सर से ऊपर गुजर जाता है। अति तनाव, महत्वाकांक्षा ही इस रोग की जननी है।

डिप्रेशन क्या है– यह रोग मन का अंसुतलन है। विद्वानों ने इसे 'मूड डिस्आर्डर' की संज्ञा दी है। 'डिप्रेशन' शून्यता का प्रतीक है। हमारे कार्य कलाप मिलना जुलना, दिनचर्या शून्य हो जाती है। किसी कार्य को प्रारंभ करने के पूर्व रोगी को उसमें तमाम जटिलतायें असफलतायें एवं भय दिखाई देता है। शून्यता की यह अनुभूति उसे एकान्त की ओर पलायन करती है। आत्म हीनता की ग्रंन्थि सतत् पलती रहती है। लगातार रोगी अपने को नकारा समझने लगता है। यही अवसाद मनोरोग बन जाता है। जो व्यक्ति को आत्म हत्या तक के लिए प्रेरित करता है। डिप्रेशन कई प्रकार के होते है।

डिप्रेशन के प्रकार :

1. यूनी पोलर डिप्रेशनः इस श्रेणी का अवसाद मन की उदासी, एकाग्रता एवं स्मरण शक्ति की कमजोरी, कब्ज, प्रातःकाल की परेशानी जनित है।

2. बाई पोलरः इस स्थिति में व्यक्ति दो विपरीत परिस्थियों से गुजरता है। जिससे अनिर्णय की स्थिति आ जाती है। अविवेक

> ध्यान रहें डिप्रेशन या अवसाद एक गम्भीर एवं जटिल मनोरोग है। जिसे व्यक्ति समझ नहीं पाता और धीरे–धीरे घर परिवार समाज और एक समय ऐसा आता है जब वह स्वयं से ही कटने लगता है, और ऐसी स्थिति अत्यंत भयावह बन जाती है।

पूर्ण ढंग से कार्य व्यय करने लगता है। उसके कार्य में आश्चर्य जनक रूप से तेजी आ जाती है। इस स्थिति को 'मेनिया डिप्रेशन' भी कहते है। अधिकांश रोगियों को कई बार जीवन में अवसाद एवं मेनिया दोनों स्थितियों को झेलना पड़ता है। मेनिया की स्थिति में रोगी की कार्य क्षमता बढ़ जाती है। उसे खाने पीने की भी सुध नहीं रहती। सेक्स की इच्छा में अप्रत्याशित बढोत्तरी हो जाती है। कभी–कभी अपनी सामर्थ्य से अधिक व्यय भी करने लगता है।

3.रियेक्टिव डिप्रेशनः इस प्रकार का डिप्रेशन किसी प्रिय की मृत्यु, प्रेम सम्बंधो का टूटना, रोजगार में हानि, कभी–कभी दूसरों के सामर्थ्य के आगे न बढ़ पाना भी इसका कारण होता है। जिसे प्रतिक्रियात्मक अवसाद कहते है।

4. एण्डोजीनियस डिप्रेशन (अंर्तजात अवसाद): यह अवसाद रोगी में अप्रत्यक्ष रहता है। उसे घर परिवार रोजगार के प्रति रूचि समाप्त हो जाती है। वह पलायन वादी जैसे साधू संत बनने की ओर उन्मुख होता है। दायित्वों के प्रतिनिहायत उदासी न हो जाता है।

5. सीजनल डिप्रेशनः मौसम बदलने पर जो अवसाद होता है वह ऋतु के सन्धिकाल में कुछ लोगों को होता है। अतः यह गम्भीर नहीं होता।

6. प्रीनेटल डिप्रेशनः गर्भावस्था के समय कुछ महिलांए अवसाद ग्रस्त हो जाती है। गर्भ को बोझ एवं उसे अपने सौंदर्य का शत्रु समझ बैठती है। उनकी आस्था गर्भ समापन में होती है।

7. पोस्ट प्रैट्रम डिप्रेशनः शिशु के जन्म के पश्चात् भी कुछ महिलाएं अवसाद ग्रसित हो जाती है। इन महिलाओं में शिशु जन्म के बाद सेक्स में रूचि नहीं रह जाती। कभी–कभी मां का रूझान शिशु के प्रति भी कम हो जाता है। ऐसी मॉये कभी–कभी स्वयं अपने ही शिशु की हत्या कर देती है।

8. प्री मेस्टुरल डिप्रेशनः मासिक धर्म के समय का अवसाद किशोरियों या कन्याओं को अर्न्तमुखी बना देता है। वे समाज से कटने में सुख का अनुभव करती है। उन्हें अपने शारीरिक परिवर्तन भी कभी–कभी अवसाद से भर देते है। वे अपने शारीरिक परिवर्तनों से बेहद दुखी हो उठती है और अवसाद ग्रस्त हो जाती है।

9.उम्र का डिप्रेशनः इस प्रकार बचपन, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, बृद्धावस्था का अवसाद। व्यक्ति को जीवन से निराश कर सकता है।

अवसाद या डिप्रेशन की पहचान एवं निराकरण : चिंता, अहं पर चोट, भावनाओं का अनादर, गृहकलह, अप्राकृतिक जीवन शैली, आज हमारे सामान्य जीवन में 'डिप्रेशन' एक आम शब्द हो गया है किसी को कोई नुकसान हो जाय किसी

को कोई दिमागी तनाव हो जाय तो लोग अक्सर कह देते है कि हमें 'डिप्रेशन हो गया है। सामान्य जीवन में यह एक अत्यन्त प्रचलित शब्द हो गया है। किंतु ऐसा नहीं हे चिकित्सा विज्ञान एवं मनोविज्ञान में डिप्रेशन उस बीमारी नाम है जिसके साथ लक्षणों का एक जटिल समूह जुड़ा होता है। जीवन में उत्साह की कमी, घबराहट एवं व्याकुलता, पाचन शक्ति कम या अधिक अत्यधिक थकान, अनिद्रा या अधिक सोने की प्रवृत्ति, स्वयं को असहाय, चिड़चिड़ापन अयोग्य समझना, आत्महत्या की मनोवृत्ति। अपराध, आत्म सम्मान की कमी, अधिक खाना या बिल्कुल न खाने की भी प्रवृत्ति हमेंशा अकेले रहने या अधिक बोलने की प्रवृत्ति। आदि इसमें लक्षण है।

डिप्रेशन से छुटकारा कैसे पायें:– यदि स्थिति काफी पुरानी है तो किसी मनोचिकित्सक से सम्पर्क करें। उस उपचारित डिप्रेशन वषो तक या जीवन पर्यन्त व्यक्ति को कष्ट देता है। ऐसी स्थिति में साइक्रेटिस्ट से तो परामर्श ले हीं साथ ही सम्पूर्ण परिवार का भी दायित्व होता है रोगी को संभालने का।

1. डिप्रेशन वाले व्यक्ति को अकेला न छोड़े। डिप्रेशन का उपचार काफी लम्बा चलता है। अतः सहयोग एवं धैर्य से रोगी व्यक्ति को लाभ दे। एवं चिकित्सक से बराबर परामर्श लेते रहे लम्बे समय तक।

2. डिप्रेशन से ग्रसित व्यक्ति के मनोभावों को खोलें। मनोभाव को व्यक्त करते ही व्यक्ति को रोग से उबरने में सहायता मिलनी प्रारम्भ हो जाती है।

3. रोगी को सांस्कृतिक सामाजिक, धार्मिक आयोजनों में ले जाये। लोगों से मिलाये। एवं पूर्व गल्तियों को उसे याद न दिलाये।

4. अश्रुप्रवाह के द्वारा भी इसकी चिकित्सा में सहयोग मिलेगा। रोगी को यह समझाने का प्रयास करें कि उसे आप सब प्यार करते है।

याद रखें डिप्रेशन केवल बुद्धिमान एवं सझमदार व्यक्तियओं को ही होता है। भावना विहीन व्यक्ति सामान्यतः डिप्रेशन के शिकार नहीं होते। अतः आप सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं। सब कुछ इस जहां में हमें ही नहीं मिल सकता इस भावना से युक्त रहे।

इस स्थिति में शरीर के छः आवेगो का न रोके भूख, प्यास, नीद, विश्राम, शौच एवं मूत्रा त्याग। साथ ही डिप्रेशन से युक्त व्यक्ति को उसकी सार्थकता ज्ञात करायें। जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण बदले। उसके मन के खाली पन को बदलने का प्रयास करें। इस बीमारी को चिकित्सा एक्यूप्रेशर एवं एक्यूपक्चर में सफलता से किया जा रहा है। अतः हो सके तो रोगी को इस चिकित्सा का लाभ दे।

श्रुती त्रिपाठी

टमाटर का आमलेट

सामग्री : 500 ग्राम बेसन, 250 ग्राम टमाटर, जीरा, मिर्चा, अजवाइन, नमक, स्वादानुसार, हरी धनिया,प्याज, खीरा

विधिः टमाटर पीस कर बेसन में मिला ले। पेस्ट को हल्का गाढ़ा कर ले। भुना हुआ जीरा, मिर्चा, अजवाइन,नमक, हरी धनिया, प्याज, खीरा सबका सलाद बना लें। तवे पर हल्का तेल लगाकर बनाया हुआ पेस्ट डाल कर उसको फैला दे। उसके बाद जब एक तरफ पक जाए तो उसको पलट दे। पके हुए पर सलाद डालकर प्लेट में निकाल कर चटनी के साथ खाने के लिए पेश करे।

आलू चाप

सामग्रीः एक किलोग्राम आलू, 1 कप दूध, आधा किलो मैदा, जीरा, मिर्चा, लहसून, प्याज, मसाला, लौंग, नमक

विधिः आलू उबाल कर छी ले। आलू को मसल ले। उसमें लौंग, जीरा, मिर्चा, लहसून, प्याज, मसाला कड़ही मेंभुनकर आलू में डाले। अच्छी तरह से भुन कर निकाल ले। उसमें एक कप कच्चा दूध डाले, नमक स्वादानुसार, सब अच्छी तरह से मिला ले। मैदे के पेस्ट में डालकर पेश करें।

अगर आप व्यंजन बनाने में निपुण है और चाहती है कि आपके इस गुण से और लोगों को भी मिले तो उठाये पेन और कापी हमेंलिख भेजिए। हम आपके लेख स्नेह व्यंजन में प्रकाशित करेंगे और अच्छे व्यंजन को हम पुरस्कृत भी करेंगे। हमें इतंजार है– स्नेह व्यंजन, द्वारा संपादक, हिन्दी मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज, एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

सौरभ ऑटो प्वांइट

निकट स्टेट बैंक, राघव नगर, देवरिया

हीरो होन्डा मोटर साईकिल की रिपेयरिंग, सर्विसिंग, धुलाई असली पुर्जो एवं एसेसरीज के लिए एक मात्र विश्वसनीय स्थान

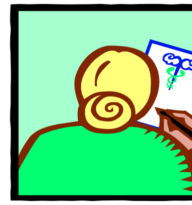

इधर–उधर की

मोबाइल फोन से छोटे सिर वालों को ज्यादा नुकसान

मोबाइल फोन का इस्तेमाल होना शुरू होने के साथ ही साथ इसके फायदे और नुकसान पर चर्चा की शुरूआत हो चुकी है। स्वास्थ्य से लेकर सामाजिक जीवन तक पर इसके प्रभावों पर शोध हो रहे है। अब विशेषज्ञों का कहना है कि मोबाइल फोन के ज्याद इस्तेमाल से छोटे सिर वालें लोगों और बच्चों को ज्यादा नुकसान पहुंचता है। स्पेन के वेलेंशिया शहर में हाल ही में हुए इस अध्ययन में बताया गया है कि इससे स्नायुतंत्र सीधे–सीधे प्रभावित होता है।

डॉ0 स्टीव क्वींसलैंड के अनुसार मोबाइल फोन से नुकसान हर उम्र के व्यक्ति को होता है, लेकिन जिन लोगों के सिर छोटे होते हैं, खासतौर से बच्चे, वे इसका सबसे ज्यादा शिकार होते हैं। मोबाइल फोन से निकलने वाली चुबकीय तंरगे कम परिधि को ज्यादे प्रभावित करती है।

अनोखा कवि सम्मेलन

सैंटियागो। आजकल कवि सम्मेलनों में दिन प्रतिदिन हो रही श्रोताओं की गिरावट व कवियों की कविताओं को शांति से सुनने से आजिज आकर सात कवियों ने विरोध स्वरूप वनमानुषों के लिए एक कवि सम्मेलन अयोजित किया। ये कवि दुनिया को बता देना चाहते है कि वनमानुष इनसानों से कहीं अच्छे श्रोता है। यह कवि सम्मेलन वनमानुषों के पिंजरे के भीतर आयोजित हुआ। इसी में अलग से कवियों के लिए एक पिजरा बनाया गया जिसमें बैठकर वे इन जानवरों को काव्य पाठ सुनाये। ये सातों कवि बारी–बारी अपनी रचनाएं पढ़े जो वनमानुषों को संबोधित करके लिखी गई है। आमतौर हमलें के मूड में रहने वाले वनमानुष कवियों की ईच्छा के अनुरूप शांति से कवि सम्मेलन का लुत्फ उठाया।

कबूतर–कुतिया की दोस्ती

तिमारू। कबूतर अगर अपने साथी को खो दे, तो किसी और कबूतर की तलाश कर लेता है, लेकिन यह कबूतर अन्य कबूतरें से अलग था उसने एक कुतिया को जो उसके दुख में इतनी तसल्ली दी थी कि वह अब परछाई की तरह उसके साथ लगा रहता है।

एक साल पहले कबूतर की साथी की मौत हो गई, तो उसे शायद लगा कि जो उसके साथ सहानुभूति रखती है। अब दोनों साथ–साथ हर पल नजर आते हैं।

पुलिस से बचा पत्नी के चंगुल में फंसा

क्रेमोना। हुआ यह कि वह आदमी क्रेमोना के एक बाहरी क्षेत्र में टैक्सी से उतरा और अपने मित्र की कार में जा बैठा, लेकिन गलती से अपना सूटकेस टैक्सी में ही भूल गया। जब किसी ने उस सूटकेस की खबर पुलिस को दी तो पुलिस ने उसे खोला और उसमें लिखें पते को देखकर उसके घर जा पहुॅंची। उसकी पत्नी हैरत में पड़ गइ। कि विदेश गए उसके पति का सूटकेस शहर में कैसे है।

अब पुलिस उसके खोए हुए पति की तलाश में निकली। वह अपने मित्र और दो क्यूबाई डांसरों के साथ धर लिया गया। पुलिस ने तो उसे अपने शक से बरी कर दिया है, लेकिन पत्नी समझ नहीं पा रही है कि वह अपने इस अपराधी पति का क्या करे।

नाक से गले के कैंसर का इलाज

अब नाक में दवा का स्प्रे करके गले के कैंसर का इलाज किया जा सकेगा। विज्ञानियों का कहना है कि गले के कैंसर की दवा वास्तव में एक टीका है जिसे नाक के जरिये दिया जा सकेगा। फिलहाल इसका प्रयोग जानवरों पर किया जा रहा है। विज्ञानियों का दावा है कि इससे कैंसर के मरीजों का बचाव हो सकेगा। गले का कैंसर हयूमन पैपीलोमा वायरस से विकसित होता है। इसके इलाज के लिए विकसित किया गया यह टीका काफी मंहगा है। गले का कैंसर गरीब देशों में ज्यादा होता है, लेकिन वहां इस टीके को खरीद पाना हर किसी के वश में नहीं होगा। अगर यह सब लोगों तक पहुंच सके, तो हर साल 3 लाख लोगों की जान बच सकेगी।

बिना शुक्राणु के बच्चे

लॉस एंजिल्स। अमेरिका में विज्ञानियों ने कुछ ऐसे रसायन खोज लिए है, जिन्हें मिलाने से कृत्रिम शुक्राणु तैयार किए जा सकते है। इसका प्रयोग मादा चूहों पर किया गया, जिससे उनके अंडे खुद ही क्रोमोसोम्स उत्पन्न करने लगे और आगे कोशिकाओं का विभाजन प्रारंभ हो गया। कोशिकाओं के विभाजन से ही मानव जीवन की शुरूआत होती है। विज्ञानियों को उम्मीद है कि ये प्रयोग इनसानों पर भी सफल रहेंगे। मानव शिशु की रचना के लिए 23 जोड़े क्रोमोसोम्स अंडे में और 23 जोड़ें क्रोमोसोम शुक्राणु में होते है।

इधर–उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबरे जोआपके संज्ञान मेंहो या कोई नया आविष्कार हुआ हो तो हमें भेज सकते हैं। अच्छी खबर को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे। अच्छी खबरें के छपने पर हम आपको हजारों रुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगे तो देर किस बात की। कलम उठाइए और लिख भेजिए हमारे पते पत्र–व्यवाहार के पते पर।

(कहानी)

प्रेरणा का दान

डॉ0 नरेश कुमार गौड़ (अशोक)

पकड़ो......पकड़ो ......पकड़ो। उसने उत्सुकता से फैक्टरी के बाहर निकल कर देखा..... पकड़ो, पकड़ों का शब्द शनैः शनैः तेज होता जा रहा था। यह इस बात का संकेत था कि शब्द करने वाले उसकी ही ओर बढ़ रहे है। क्षण भर में ही उसे एक नवयुवक अपनी ओर बेतहासा दौड़ता हुआ आता दिखाई दिया। जैसे ही वह नवयुवक उसके सामने से निकलने को हुआ उसने उसे पकड़ लिया।

उसे लगा इलाहाबाद के इम्पलाइमेंट एक्सचेन्ज की सड़क से बनारस की इस फैक्टरी तक इस ध्वनि इस ध्वनि की रेखा खींच गई हो। उसने उस नवयुवक में अपनी ही छवि देखी। उसके मस्तिष्क में आज से छह वर्ष पूर्व इलाहाबाद में घटित घटनायें सहसा बिजली की भांति कौंध ा गई। वह कॉप उठा। उव नवयुवक के प्रति उसके मन में सहानुभूति का स्रोत उमड़ पड़ा। वह यह सोचकर द्रवीभूत हो उठा कि सम्भवतः मेरी तरह ही इस नवयुवक को भी पेट की ज्वाला ने यह कुकृत्य करने को विवश किया हो। उसने आगन्तुक युवक को फैक्टरी के भीतर जाने का आदेश दिया और स्वयं फैक्टरी के द्वार पर खड़ा होकर उस नवयुवक को पीछे दौड़ने वाली भीड़ के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा। भीड़ ने अपराधी को उसे पकड़ते देख लिया था। अतः भीड़ की गति सामान्य हो गई थी।

वह फैक्टरी का मैनेजर था। उसे आस पास के क्षेत्र में पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त थी। उसकी ईमानदारी की सर्वत्र चर्चा थी। उस क्षेत्र के निवासी उसके पास आकर ही अपने सब झगड़े तय कराते थे। सभी की उसके प्रति अपार श्रद्धा थी वाल्य काल में ही पिता एक युद्ध में मारे गये थे। उसकी माता ने परीश्रम पूर्वक उसे हाईस्कूल तक शिक्षा दी थी। एक दिन वह भी भगवान को प्यारी हो गई। उस पर एक पहाड़ सा टूट पड़ा था किन्तु वह था बड़ा साहसी। अब वह दिन भर मेहनत मजदूरी करता और रात को विद्यार्जन। इसी भांति शनैः शनैः उसने एम.ए. की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में व्यक्तिगत छात्र के रूप में उत्तीर्ण कर ली। यह सब इसी में कि उसे समाज में उचित आदर और सम्मान मिलेगा और उसके स्वर्गीय माता–पिता की आत्मा को शान्ति। उसे फलते फूलते देखकर .....। किन्तु वह न जानता था कि उसे मेहनत मजदूरी से भी हाथ धोना पड़ेगा एम.ए. करने के पश्चात्......।

उसे भली भॉति स्मरण है कि एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उसने तीन वर्ष तक जूते तोड़े थे नौकरी की तलाश में . .. किन्तु भला अभाव में आशा को प्राश्रय कैसे मिलता? उसने एक बार पुनः मजदूरी करनी चाही थी। वह भी न मिली थी उसे। उसकी एम.ए. की उपाधि उसे मजदूर बनाने में असफल सिद्ध हुई। उसका उपाधि पत्र देखकर हर सेवायोजक कहता 'तू क्या करेगा मजदूरी? सूट वूट पहन कर घूमेगा ये काम तो गंवार करते है' आदि कहर, सभी उसकी प्रार्थना को ठुकरा देते। इस प्रकार दिन प्रति दिन उसकी स्थिति विगड़ती गई। एक दिन किराया न देने के कारण उसकी टूटी चारपाई भी अपनी कोठरी से बाहर फेंक दी। अब वह भूखा प्यासा रहकर दिन भर नौकरी की तलाश में भटकता और रात को किसी स्टेशन या पार्क में जाकर सो रहता। आखिर यह सिलसिला कितने दिन और चलता। उसे कई कई दिन हो जाते बिना खाये हुए। आखिर वह एक दिन पेट की भूख के कारण पथ भ्रष्ट हो ही गया। उस दिन उसने निराशा से अभिभूत होकर रोष में अपना उपाधि पत्र जला दिया। उसकी दृष्टि में भला अब उसका क्या मूल्य हो सकता था? उस दिन उसने एक राहगीर को इलाहाबाद के इम्प्लाइमेंट एक्सचेंज के सामने लूट लिया था। 'हाय लूट गया हाय लुट गया' के शब्द के साथ पकड़ो पकड़ो.... पकड़ों.... का शब्द हुआ और एक बेरोजगारी की भीड़ उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ पड़ी थी। आखिर उसे पकड़ लिया गया और यही से आरम्भ हुआ था उसके जेल जाने का सिलसिला ......।

..... पहली बार जब वह सजा काट कर आया था तो उसने एक बार पुनः अच्छे नागरिक का जीवन व्यतीत करने का संकल्प लिया था। इसके लिए उसने जी भर कर प्रयास भी किया किन्तु समाज के समक्ष उसे झुकना पड़ा था। समाज ने उसे बहुत मानसिक यातनाएं दी थी। सभी उसके चरित्र पर सन्देह करते। सभी ने उंगली उठाई थी उसके चरित्र पर ....। जिसके मन में जो भी आया कह गया किसी ने चोर कहा तो किसी ने बदमाश तो किसी ने लुटेरा। सबके उर में घृणा का भाव था उसके प्रति तभी तो उसके मित्रों को उसके बैठने के लिए उनके अभिभावकों ने यह कर कर रोक दिया था कि, 'मत बैठना इस नालायक के पास, जेल काटकर आया है। जब उसने काम मांगा तो उसे कहकर दुत्कार गया कि 'भई तुम्हें तो बस जेल में ही काम मिल सकता है, सभ्य समाज में तुम्हारा क्या काम?' उसने समाज एवं मित्रों को बहुत सफाई देने की कोशिश की थी किन्तु किसी ने उसकी न सुनी। यहा तक कि उसके सगे सम्बन्धियों ने भी उसका संग छोड़ दिया। मानव का मानव के प्रति होने वाला ऐसा व्यवहार भला किसे न ऊबा देगा। वह समाज में रहकर भी एक घुटन महसूस करने लगा था। वह निराशा से ही नहीं वरन तन्हा एवं अभाव से भी ग्रस्त था। वह समाज में रहकर भी था बिल्कुल एकांकी...। सम्भवतः वह इन परिस्थितियों से जूझ भी लेता किन्तु वाह रे पापी पेट, तूने, उसे पुनः अपराधी बन जाने के लिए विवश किया। उस कुण्ठा, नैराश्या अभाव एवं घुटन से मुक्ति पाने के लिए वह व्याकुल हो गया। उसे न चाहते हुए भी पुनः जेल जाने का निर्णय लेना पड़ा। यह समाज ही था जिसने उसे 'बुभुक्षितः किम् न करोति पापम्' की कहावत को चरितार्थ के

लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया था। इस अखिल विश्व में ....।

अतीत की घटनाएं उसके स्मृति पटल पर अभी चल चित्र की भॉति घूम ही रही थी कि उस नवयुवक की पीछे दौड़ने वाली भीड़ ने वहां पहुंच कर उस सिलसिले को भंग कर दिया।

एक ने कहा ... साहब इसे छोड़ दीजिए, हम इसकी जी भर पिटाई कर ले। दूसरे ने कहा– इसे पुलिस को दे दीजिये। रह रह कर तरह तरह की आवाजें भीड़ में से उमड़ रही थी। अन्त में एक ऊंची आवाज में उसने भीड़ को शान्त करते हुए कहा 'आप लोग आश्वस्त रहिये, इसके साथ वहीं व्यवहार होगा जिसका यह पात्र है और ... किस राहगीर को लूटा है इसने ....।

'मुझे भीड़ मे ंसे एक छोटा सा उत्तर आया। कितने पैसे छीने है इसने तुम्हारे..। उसने उसकी और देखकर कहा।

'तीन रूपये बीस पैसे साहब'

'तुम ये लो अपने पैसे ...। उसने जेब में हाथ डालते हुए कहा।

'नहीं साहब आप क्या देंगे .... रहने दीजिये. ..' रिक्शा वाले ने कहा।

'नहीं भाई ले लो इन्हें, आखिर जो पैसे इसने तुम्हारें लिये है, वह इस देने ही चाहिए...।' उसने आग्रह पूर्वक कहा।

'वह तो ठीक है साहब लेकिन'.....

'लेकिन वेकिन कुछ नहीं ले लो इन्हें' इतना कर कर उसने अपनी जेब से पैसे निकाले और रिक्शा वाले को दे दिया।

रिक्शा वाले ने वह पैसे संकोच पूर्वक ले लिये और चला गया। और वह भी भीड़ को जाने का आदेश देकर भीतर चला गया। भीतर जाकर उसने एक नवयुवक से पूछा–तुमने रिक्शा वाले को क्यों लूटा' 'पेट के लिए' उस नवयुवक ने उत्तर दिया। 'तुम काम करोगे' उसने सहानुभूति पूर्वक पूछा।

'जी हां, मगर कौन देगा?' प्रसन्न होते हुए नवयुवक ने निराशा के स्वर में पूछा'

' कल से तुम इसी फैक्टरी में काम करोगे' उस नवयुवक से यो कहर कर अपने कक्ष में चला गया।

नवयुवक का यह उत्तर सुनकर कि वह राहजनी पेट के लिए करता है, वह पुनः विगत स्मृतियों में खो गया वह सोचने लगा– पेट की ज्वाला ने ही विवश किया था उसे जेल जाने के लिए और इस क्रम में वह एक बार .. दोबार.. तीन बार... नहीं सात बार जेल काट चुका था किन्तु फिर भी वह व्यवसायिक अपराधी न था। उसे तो समाज ने विवश किया था अपराध करने के लिए ...। उसे जेल में वास्तव में वह सब मिला था जो समाज में जीने के लिए एक सामाजिक प्राणी को आवश्यक होता है। उसे मिला था बन्दियों का स्नेह...। कारागार के जेलर एवं वहा अन्य कर्मचारियें की सहानुभूति पेट भर भोजन और साथ में सुलभ हुआ था एक समाज..ं भले ही अपराधियों का सही। इसके विपरीत जेल के बाहर मिलती थी उसे घृणा, ईश्या, भूख, व्यंग्य, घुटन, भटकन और एकांकीपन फिर भी उसने एक बार विरोधी परिस्थितियें के मिलन विन्दुपर खड़ होकर समाज में संघर्ष करने का प्रयास किया था। इस प्रयास में समाज के थपेड़ों ने उसकी सुन्दर सौम्य आकर्षक मुखाकृति विकृत हो गई थी। उसका सुडौल सुगठित शरीर प्रायः नष्ट हो गया था। और तब अत्यन्त सोच विचार के उपरान्त उसने ये सोच कर कि वहां उसे कम से कम एक समाज तो मिलेगा...। भले ही वह अपराधियों का ही क्यों न हो? वे बड़े प्यार से राजन कहकर पुकारेंगे तो सही पेट की ज्वाला शान्त करने के लिए मुझे यो गालियों और सड़को पर तो न भटकना होगा। ये ही वे सब भावनाएं थी जो उसके बार–बार जेल जाने के लिए विवश करती थी। अब वह जेल की चहार दिवारियों में बन्द होने के लिए पुलिस को दिखाकर कोई छोटा–मोटा अपराध कर देता और बन्द हो जाता कारागार की चाहरदिवारियों के भीतर..। वह हमेश ही न्यायाधीश के समझ अपना अपराध स्वीकार कर लेता और हर बार उसे एक अल्प कालिक दण्ड सुना दिया जाता। दण्ड सुनकर वह सदैव ही ऑखे मूदकर ईश्वर को मन ही मन धन्यबाद देता मानो यही उसका गन्तव्य हो।

इसी क्रम में वह आठवी बार सजा काटकर जेल से मुक्त हो रहा था कि अचानक ही जेलर साहब जिन्हें उससे अत्यन्त स्नेह हो गया था, ने बड़े प्यार से पीठ सहलाते हुए कहा था,'बेटे क्यों अपना जीवन व्यर्थ गवा रहे हो ऐसे. पढ़े लिखें नवयुवक हो कोई काम कर लो ना...।

'इसी लिए तो आता हूॅ जेल में, उसने बड़ी लापरवाही से बात काटते हुए कहा था

'ए काम के लिए आते हो जेल में उत्तर से जेलर साहब आश्चर्य चकित रह गये थें हां साहब हां, यहॉ रोटी भी मिल जाती है और समाज भी बाहर तो दोनों से ही हाथ धोना पड़ता है। वहॉ मिलता है निरादर ईष्या निन्दा भूख और एकांकीपन...। बाहर के जीवन से तो कारागार का ही जीवन सुन्दर है..। फिर भी न जाने क्यों समाज कारागार के प्रति घृणा का भाव रखता है। उसने बड़ी अनमस्कता के साथ गहरी सांस खीचते हुए कहा था।

सम्भवतः जेलर साहब को उससे इस उत्तर की अपेक्षा न थी, क्योंकि वे तो उसे व्यवसायिक अपराधी समझते थे। वह सहसा गम्भीर हो गये थे। भावुकता में उनके नेत्र सजल हो गये थे, फिर भी अपने को संभालते हुए वे गहरी सांस लेते हुए सहानुभूति पूर्वक बोले, हां बेटे ठीक कहते हो, पता नहीं जेल के प्रति लोगों की हृदयागत भावनाएं क्यों विकृत है? वास्तव में कारागार तो एक ऐसा चिकित्सालय है, जहॉ मानसिक व्याधियों से पीड़ित व्यक्तियों की चिकित्सा की जाती है। यहां तो उन लोगों को समाज के लिए उपयोगी बनाने का उपक्रम किया जाता है, जिन्हें समाज ने अनुपयोगी समझकर निरादृत करके बहिष्कृत कर दिया था। यह पवित्र स्थली है। भ्रमवश भले ही उसे अपवित्र समझे, यह गंगा से ....।

जेलर ने आगे क्या कहात्र?.

राजन ने जेल से छूटने के बाद क्या अपना रवैया बदला?

उस लुटेरे का राजन ने क्या किया. अगलें अंक में

आपकी जुबान

पत्रिका अब पहले से 10 गुनी अच्छी हो गयी है

संपादक महोदय

पत्रिका का अप्रैल का अंक पढ़ने को मिला। पढ़कर बहुत खुशी हुई। सबसे बड़ी खुशी की बात है कि पत्रिका की जो अधिक आवश्यकता थी व हम पाठकों की मांग थी पत्रिका के कवर को रंगीन करने की वो पूरी हो गयी है पिछले कुछ ज्यादे ही रंगीन हो गई थी लेकिन इस बार तो वास्तव में कवर और साथ ही साथ मैटर में बेहतर और पठनीय है। कहानियों, लेखों व स्तम्भों का यह अनोखा संग्रह दर्शाता है कि पत्रिका परिवार पत्रिका के कलेवर पर विशेष ध्यान दे रहा है। साथ ही साथ यह भी साबित हो रहा है कि पत्रिका प्रगति के पथ पर अग्रसित है। यह बहुत अच्छी बात है। आज जहॉ तमाम पत्र–पत्रिकाएं निकलतीह एक दो अंक, ता कुछ छः महीने साल भर निकलती है और बंद हो जाती है ऐसे में पत्रिका लगातार विगत तीन वर्षो से प्रकाशित होना तथा दिन प्रतिदिन सुधार होना सम्पादक महोदय की दृढ इच्छा शक्ति को दर्शाता है। जो इस आर्थिक मंदी और पत्र पत्रिकाओं के पराभव काल में भी अपना प्रयास

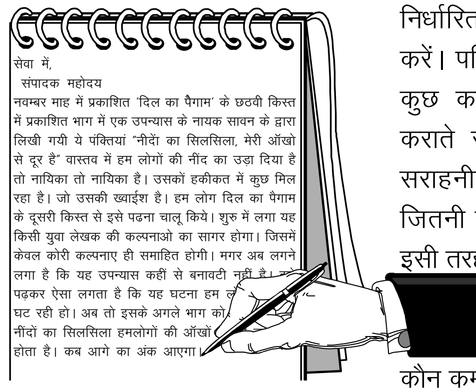
सेवा में,
संपादक महोदय
नवम्बर माह में प्रकाशित 'दिल का पैगाम' के छठवी किस्त में प्रकाशित भाग में एक उपन्यास के नायक सावन के द्वारा लिखी गयी ये पंक्तियां "नीदें का सिलसिला, मेरी ऑखो से दूर है" वास्तव में हम लोगों की नींद का उड़ा दिया है तो नायिका तो नायिका है। उसकों हकीकत में कुछ मिल रहा है। जो उसकी ख्वाईश है। हम लोग दिल का पैगाम के दूसरी किस्त से इसे पढना चालू किये। शुरु में लगा यह किसी युवा लेखक की कल्पनाओ का सागर होगा। जिसमें केवल कोरी कल्पनाए ही समाहित होगी। मगर अब लगने लगा है कि यह उपन्यास कहीं से बनावटी नहीं है। ... पढ़कर ऐसा लगता है कि यह घटना हम ... घट रही हो। अब तो इसके अगले भाग को ... नींदों का सिलसिला हमलोगों की ऑखों ... होता है। कब आगे का अंक आएगा।

निरंतर जारी रखे हुए है। सबसे खास बात तो यह है कि पत्रिका में अभी कोई बड़े और खास विज्ञापन भी नहीं मिल रहे है। कृपया हम आप का यथा सम्भव सहयोग करने का प्रयास करेंगे। आपका सहयोग करने में हमें बहुत खुशी होगी। पात्र है।

डा0 सुलोचना सिंह,
गोला बाजार, गोरखपुर

पत्रिका में कुछ राजनीतक सामग्री अवश्य डाले।

संपादक महोदय

विश्व स्नेह समाज का मैं नियमित ग्राहक हुँ। जब भी पत्रिका में देर होती है हमारी निगाहें दुकान की तरफ दौड़ने लगती है। कि अंक आया की नहीं। कृपया इसे एक निर्धारित समय पर निकालने का प्रयास करें। पत्रिका में अप्रैल अंक की तरह ही कुछ करेंन्ट सामाचारों से हमें अवगत कराते रहे। अप्रैल का अंक बहुत ही सराहनीय अंक रहा है। इस अंक की जितनी सराहना की जाय कम है। आप इसी तरह से पत्रिका में सुधार दिन प्रतिदिन [redacted] पत्रिका एक दिन अपने नाम से [redacted]आएगी। इसके सम्पादक कौन है, कौन कर्मचारी है यह बातें गौड़ हो जायेगी। इस बार केवल भूख कहानी थोड़ी सी अटपटी लगी। लेकिन दूसरे दृष्टिकोण से देखने पर आज हम सभ्य होने का दंभ ठोकते है ऐसे में इस तरह की घटनाओं का होना बहुत निंदनीय और अशोभनीय है।

गल्तियों को क्षमा करें

आपका

ओम प्रकाश तिवारी, सिरसा, इलाहाबाद

पाठकों से अनुरोध

सभी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि उनकों पत्रिका कैसी लगी। पत्रिका में क्या कमियॉ है, क्या और डाला जाए क्या हटाया जाए आदि के बारें अपने विचार हमें निरन्तर भेजते रहें। आपके विचार ही हमारी सर्वोत्तम पूजीं है।

संपादक

थोड़ी पूंजी में चोक उद्योग लगाकर पन्द्रह हजार रूपये महीने कमाएँ।

सम्पर्क करें:

संघर्ष इलेक्ट्रिकल्स

रामनगर चौराहा, नैनी, इलाहाबाद

बेबाक

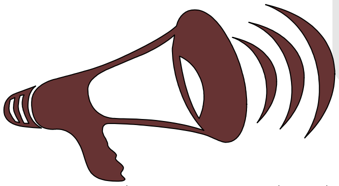

एशिया–ओसानिया ग्रुप–1 के दूसरे राउंड में न्यूजीलैण्ड के खिलाफ मैच में दोनों टीमों की क्षमताओं की परख होगी

रमेश कृष्णनन,
कप्तान, भारतीय डेविस कप

मिश्रित युगल टूर्नामेंट की उनकी नई भागीदार मार्टिना नवरातिलोवा ने उनमें खेल के प्रति उत्साह और जोश भरा है।

लिएंडर पेस

अब युद्ध को रोकने के लिए किसी समझौते की कोई गुंजाइश नहीं रह गई है।

डोनाल्ड रम्सफील
अमेरिकी रक्षा मंत्री, भारत

सपा की सरकार बनी तो वैट समाप्त होगा।

मुलायम सिंह यादव
पूर्व रक्षा मंत्री

सपा के पास अब कोई कामधाम नहीं रह गया है। वह बौखलाहट में ओछे और घटिया आरोप लगाकर अपने खिसकते जनाधार से जनता का ध्यान हटाना चाहती हैं।

सुश्री मायावती
मुख्यमंत्री उ0प्र0

देवी–देवताओं पर मायावती की टिप्पणी को जायज ठहराने वाली भाजपा को जनता से मॉफी मांगनी चाहिए।

कल्याण सिंह
पूर्व मुख्यमंत्री, उ0प्र0

नया दायित्व मिलने के बाद वह अपने कंधों पर ज्यादा जिम्मेदारी महसूस कर रहे है।

वीरेन्द्र सहवाग
उपकप्तान चयन होने पर

प्रदेश को गृहयुद्ध की ओर ले जा रही है मायावती

कल्याण सिंह
अध्यक्ष, राष्ट्रीय क्रांति पार्टी

दौलत और सत्ता के नशे में मायावती अंधी हो गई है।

मुलयाम सिंह यादव
सपा अध्यक्ष

हमें लोकतंत्र के लिए प्रेस की आजादी का सम्मान करना होगा, लेकिन हम यह जानना चाहते हैं कि पत्रकारिता व्यवसाय है या प्रतिबद्धता?

रविशंकर प्रसाद
सूचना प्रसारण राज्य मंत्री,भारत

मैं लाहौर गया था लेकिन इसका बदला हमें कारगिल हमले के रूप में मिला। जनरल साहब को आगरा बुलाया। सोचा मोहब्बत हो जाएगी, लेकिन काम नहीं बना। हम फिर दोस्ती का हाथ बढ़ा रहे है, लेकिन इस बार दोस्ती दो तरफा होनी चाहिए।

अटल बिहारी वाजपेयी
प्रधानमंत्री, भारत

पाकिस्तान के साथ संबंध सामान्य बनाने के लिए बातचीत तभी संभव है वही सीमापार आतंकवाद पर लगाम लगाए।

एम. वेकैंया नायडू
भाजपा अध्यक्ष–प्रवक्ता

अमेरिका ने अफगान और इराक में अपने सबसे सफल अभियानों के जरिए पूरे देश को निशाना बनाए बगैर शासकों को हटा कर युद्ध की एक नई तस्वीर पेश की है।

जॉर्ज बुश
राष्ट्रपति, अमेरिका

आज कोई राजनेता व राजनीतिक दल दूध का धुला नहीं है।

कलराज मिश्र
भाजपा प्रदेश प्रभारी

कार्टून की डायरीः

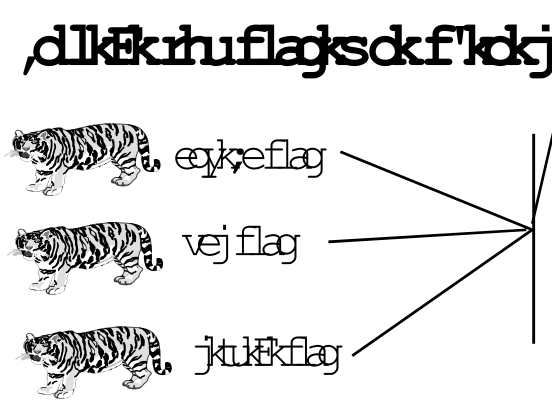

दाउ जी

आवश्यकता है

ekfldif=dk **fo'o Lusg lekt** gsrq mRrj izns'k] mRrjkapy] NRrhlx<+] >kj[kaM] e/; izns'k] fcgkj] fnYyh ,oa jktLFkku esa

0 ladkn nkrk **0 fokKkiu izfrfuf/k**

0 fokKkiu ,tasV **0 C;wjks** **0 ,tsaV**

gesa fVdV yxsa tksa dkch fy[kQ ls dksl kEk fy[ksa % ,y-vkbZ-th-&93] uhe ljk; dkWyksuh] eq.Msjk] bykgkckn

---

दूरभाष—225015

मार्बल पैलेस

श्री श्याम टाईल्स

राघव नगर, स्टेट बैंक के पास, देवरिया

uksV% gekjs ;gka ekcZy] VkbYl] lhV] flesUV] ikbi bR;kfn mfpr ewY; ij miyC/k gSA

---

gk'kD;ksa! gk'kD;ksa!

यदि आप **शादी से पहले या शादी के बाद** किसी भी प्रकार के गुप्त रोग जैसे **नपुंसकता, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, धातुरोग, पेशाब में जलन, कमरदर्द, कमजोरी, टेढ़ापन, खड़ा न होना** आदि रोगों से परेशान है। जगह—जगह इलाज करवाोषज्ञ **डा. जी0एन0 दूबे एवं डा0 आर0 के0 तिवारी** अगले माह से आपके क्षेत्र देवरिया में बैंठेगे।

xqIr jksxksa ds bZykt

vc fcYdqy vklku

दाउजी क्लीनिक

सिविल लाईन्स, गोरखपुर रोड, देवरिया, यू0पी0

डॉ0 जी.एन.दूबे

डॉ0 आर.के.तिवारी

ऐक्सेल पॉली क्लीनिक

MkW0 /esZUnz dqekj JhokLro

(B.E.H.S) RNo- D3947

क्या आप शुगर, लिकोरिया, चर्म, पेट रोग के मरीज है?

100% गारण्टी के साथ मिले।

कोई साइड इफेक्ट नहीं।

स्थान : 196B/2K, प्रियदर्शनी नगर, आदर्श नगर काली मंदिर के पास, नयापुरा, करैली, इलाहाबाद

फोन ☎ : 0532-2616634

मात्र 30,000/— में उपलब्ध

पागल आटो रिक्शे का मिजाज

पागल बेरोजगारों का इलाज

शानदार फाइनेन्स सुविधा के साथ

विशेषताएं

- कम्पनी निर्मित बाडी
- आधुनिक एवं सुंदर
- रख—रखाव में आसान
- कम खर्च
- एक लीटर 25 किमी0
- आराम दायक सफर
- गाड़िया स्टाक रहने तक

योजना सीमित अवधि के लिए

खर्च कम, अधिक कमाई, बेहतर सौदा

डीलर : **मे0 रोहन आटो मोबाइल्स**

बैद्यनाथ कम्पनी के सामने, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद ☎696683, 697518 **ब्रान्च आफिसः** मामा भांजा का तालाब, पुलिस चौकी, रीवां रोड, इलाहाबाद ☎696683 वर्कशापः 93/4, लेबर कॉलोनी, पीएसी के पास, नैनी, इलाहाबाद ☎697518